thearyasamaj.org

ओ३म्

# आर्य जगत

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 25 मई 2014 | आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र | सप्ताह रविवार 25 मई 2014 से 31 मई 2014

ज्ये. कृ. 12 ● वि० सं०–2071 ● वर्ष 79, अंक 109, प्रत्येक मंगलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 191 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,115 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

## हिमाचल प्रदेश की राजधानी में गूँजे वैदिक ऋचाओं के स्वर

# डी.ए.वी. न्यू शिमला में 75 कुण्डीय हवन यज्ञ और वैदिक कथाओं ने बांधा समां

डी.ए.वी. कॉलेज मैनेजिंग कमेटी के 'सेन्टर फॉर एजुकेशनल एक्सलेंस' के तत्त्वावधान में उत्तर–पश्चिमी भारत के सात राज्यों में कार्यरत डी.ए.वी. विद्यालयों के प्राचार्यों की एक दो दिवसीय गोष्ठी डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, न्यू शिमला में आयोजित की गयी। गोष्ठी का एकमात्र उद्देश्य था–शिक्षा के उद्देश्यों और इसमें प्रयुक्त होने वाली तकनीक प्रविधियों में गुणात्मक परिवर्तन लाना। आदरणीय प्रधान श्री पूनम सूरी जी के विशेष आग्रह पर इस गोष्ठी के साथ–साथ प्राचार्यों को वैदिक विचारो, मान्यताओं से परिचित करवाकर धार्मिक शिक्षा को अधिक प्रभावशाली बनाने की दिशा में सशक्त और सार्थक कदम उठाए जाना भी था। इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए गोष्ठी में दोनों दिन प्रातः एक–एक घंटे का यज्ञ किया गया। जिसमें लगभग 300 संस्थाओं से आए प्राचार्यों ने 75 यज्ञकुण्डों पर बैठकर यज्ञ का प्रशिक्षण लिया और उसकी प्रक्रिया को तर्कसंगत रूप से समझने का प्रयास किया।

इस विशेष यज्ञ को चलाने के लिए दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय, हिसार के प्राचार्य डॉ. प्रमोद योगार्थी और उनके साथ आए छह ब्रह्मचारी विशेष रूप से उपस्थित हुए। डॉ. योगार्थी ने ब्रह्मा की भूमिका निभाते हुए ब्रह्मचारियों के साथ ऋचाओं के मधुर गान से सारे वातावरण को यज्ञमय बना दिया। डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, न्यू शिमला के संगीत विभाग के सौजन्य से छात्रों द्वारा प्रस्तुत किए गये भजनों की स्वरलहरियाँ सारे वातावरण को संगीतमय बना रही थीं।

मान्य प्रधानजी ने आदरणीय श्रीमती मणि सूरीजी सहित मुख्य यजमान दम्पति की भूमिका निभाते हुए इस यज्ञ में अत्यंत गंभीरता और भावुकता से भाग लिया। उनके साथ डी.ए.वी. कॉलेज मैनेजिंग कमेटी से आए हुए महामंत्री श्री आर.एस शर्माजी, उप–प्रधान श्री प्रबोध महाजन जी (सपत्नीक), एवं अन्य पदाधिकारियों सहित मुख्यालय के निदेशकों तथा अन्य क्षेत्रीय निदेशकों ने भाग लिया। श्री सत्यपाल आर्य, सचिव, डी.ए.वी. कॉलेज मैंनेजिंग कमेटी एवं सह–सचिव, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा ने इस आयोजन को प्रभावी बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिकानिभाई। दिल्ली तथा हरियाणा से आए नौ धर्माचार्यों ने भी इस यज्ञ को सफल बनाने के लिए महत्त्वपूर्ण सहयोग दिया।

दोनों दिन अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त वैदिक प्रवक्ता डॉ. वागीश शर्माजी का प्रवचन हुआ। उन्होंने धर्म–चतुष्टय तथा भाग्य–कर्म, ईश्वर–कृपा और पुरुषार्थ के महत्त्व को स्पष्ट करते हुए समय, परिश्रम, बुद्धि और दिशा के आधार पर जीवन–विकास को आगे बढ़ाने की बात कही। डॉ. वागीश ने जड़ और चेतन, सुख और दुःख आदि विषयों को लेकर अपने बहुमूल्य विचार प्रस्तुत करते हुए जीवन को तनावमुक्त रखने के विशेष गुर बताए और शिक्षा को मूल्याधारित बनाने पर बल दिया। दोनों दिन ही डॉ. वागीश के उद्बोधन अत्यंत प्रभावकारी सिद्ध हुए।

गोष्ठी में भाग लेने आए सभी प्राचार्यों और विद्वानों ने डी.ए.वी. कॉलेज मैनेजिंग कमेटी और सेन्टर फॉर एजूकेशनल एक्सलेंस की इस महत्त्वपूर्ण पहल पर हार्दिक संतोष और प्रशंसा व्यक्त की और मान्य प्रधानजी के नेतृत्व में मैनेजिंग कमेटी को जो सच्चा दयानन्द एंग्लो वैदिक स्वरूप दिया जा रहा है उसकी मुक्त–कण्ठ से सराहना की। मान्य प्रधान जी ने क्षेत्रीय निदेशिका श्रीमती पी.शोफत और उनकी टीम की हार्दिक सराहना करते हुए प्रबन्ध समिति की ओर से सभी का समान करते हुए शॉल भेंट की

# डॉ. भवानी लाल भारतीय को लाला दीवान चन्द्र ट्रस्ट ने किया सम्मानित

लाला दीवानचन्द्र ट्रस्ट द्वारा भारतीय लोक प्रशासन आर्य समाज के मर्धन्य विद्वान डॉ. भवानी लाल भारतीय को सम्मानित किया गया। संस्थान के सभागार में न्यायमूर्ति ए.एस. आनन्द की अध्यक्षता में सम्पन्न हुए एक सम्मान समारोह में। वे है– प्रो. भवानीलाल भारतीय तथा डॉ. रामप्रसाद दाधीच।

डॉ. भारतीय का छः दशकों में विस्तृत लेखन बहु आयामी है। उन्होंने वेदों, उपषिदों, भारतीय दर्शन पर पर्याप्त लिखा है। वे भारत के नवजागरण के विशिष्ट अध्येता रहे हैं और इस प्रसंग में उन्होंने भारत के सुधार आन्दोलनों (ब्रह्म समाज, आर्य समाज, थियोसोफीकल सोसायटी तथा रामकृष्ण मिशन) पर बहुत से ग्रन्थों की रचना की है। आर्य समाज से विशेष सम्बन्ध रहने के कारण वे स्वामी दयानन्द के जीवन एवं विचारों के विशेष अध्येता रहे हैं। उन्होंने स्वामी दयानन्द पर लगभग 70 ग्रन्थों की रचना की है। वे भारत भर में आर्य समाज तथा भारतीय संस्कृति पर अनेक व्याख्यान देने के अलावा नेपाल, मारिशस तथा हालैण्ड में व्याख्यान देने हेतु गयें है।

यह एक सुखद प्रसंग है कि पुरस्कार प्राप्तकर्ता दोनों साहित्यकर्मी न केवल एक ही गांव (परमबतसर, जिला नागौर) के निवासी है, बल्कि दोनों प्राइमरी तथा मिडिल स्तर तक की कक्षाओं में सहपाठी भी रहें हैं।

इसी अवसर राजस्थानी साहित्य के प्रामाणिक विद्वान डॉ. राम प्रसाद दाधीच को भी उनके काव्य साहित्य और शोध ग्रन्थों के लिए सम्मानित किया गया।

अस्वस्थता के कारण डॉ. भारतीय के कनिष्ठ पुत्र प्रो. गौरमोहन माथुर (केश्वानन्द कृषि विश्व विद्यालय के कृषि अनुसंधान केन्द, श्रीगंगानगर में मृदा विज्ञान में प्राध्यापक के पद पर कार्यरत) ने पुरस्कार राशि ग्रहण की। उन्होंने डॉ. भारतीय के लेखन कार्य का परिचय दिया।

डॉ. भारतीय जी के अस्वस्थ होने के कारण यह सम्मान उनके सुपुत्र श्री ने प्राप्त किया

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। – स. प्र. समु. १

संपादक – श्री पूनम सूरी

earyasamaj.org



ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार 25 मई, 2014 से 31 मई, 2014

# यज्ञ रचा, दान कर

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

न त्वां शतं चन ह्रुतो, राधो दित्सन्तमामिनन्।
यत् पुनानो मखस्यसे।।

ऋग् ९.६१.२७

ऋषिः **अमहीयुः आङ्गिरसः**। देवता **पवमानः सोमः**। छन्दः **गायत्री**।

● (हे आत्मन्!), (**राधः**) धन को, (**दित्सन्तं**) दान करना चाहते हुए, (**त्वा**) तुझे, (**शतं चन**) सौ भी, (**ह्रुतः**) कुटिल वृत्तियाँ व कुटिल जन, (**अ आमिनन्**) हिंसित अर्थात् मार्ग–च्युत न कर पायें, (**यत्**) जब, (**पुनानः**) (स्वयं को) पवित्र करता हुआ। (तू), (**मखस्यसे**) यज्ञ रचाता है।

● हे पवमान सोम! हे स्वयं को तथा मन, बुद्धि आदि को पवित्र करने वाले सात्विक–वृत्ति जीवात्मन्! जब तू परोपकार का यज्ञ रचाता है और अपना धन किन्हीं सत्पात्र व्यक्तियों को या संस्थाओं को दान देने का संकल्प करता है, तब बहुत–सी कुटिल स्वार्थ–वृत्तियाँ और बहुत–से कुटिल मनुष्य तेरे उस दान–व्रत की हिंसा करना चाहते हैं और तुझे दान के मार्ग से विचलित करने का प्रयत्न करते हैं। स्वार्थ–वृत्ति कहती है कि सहस्त्र, दश सहस्त्र, पचास सहस्त्र, लाख, दो लाख रूपया तुम अन्यों को दान कर कर रहें हो, तो क्या स्वयं भूखे मरना चाहते हो? देखो, सब अपनी सम्पति बढ़ा रहे हैं; जो सहस्त्रपति है वह लक्षपति बन रहा है, जो लक्षपति है वह करोड़पति बन रहा है। उनके पास कई–कई कोठियाँ हैं, मोटरकारें हैं, सेवक हैं। क्या दान का ठेका तुमने ही लिया है? क्या तुम्हारे ही भाग्य में यह लिखा है कि स्वयं तो मोटा–झोटा पहनो, रूखा–सूखा खाओ, झोपड़ी जैसे मकानों में रहो और दूसरों पर धन लुटाओ। पहले अपनी और अपने कुटुम्ब की स्थिति सुधारो, फिर अन्यों की सुध लेना। हे आत्मन्! तू उस स्वार्थ–वाणी को मत सुन। तुझे दान करने के लिए उद्यत देख कई स्वार्थी परिचित मनुष्य भी आकर मिथ्या ही आलोचना करते हैं कि तुम जिस संस्था को दान करने जा रहे हो, उसकी आन्तरिक अवस्था को भी जानते हो? उनमें सब खाऊ–पिऊ बैठे हैं, तुम्हारा दिया हुआ दान उन्हीं के पेट में जाएगा। हे आत्मन्! तू उन उन स्वार्थी जनों के भी कुटिल परामर्श पर ध्यान मत दे। सौ प्रकार की स्वार्थ–भावनाएँ और सौ स्वार्थी–जन भी तुझे तेरे दान के संकल्प से विचलित न कर सकें।

हे मेरे आत्मन्! वेद–शास्त्रों की वाणी सुन, जो तुझे दान के लिए प्रेरित कर रही है। तू अपनी कमाई में से प्रतिदिन या प्रतिमास कुछ निश्चित प्रतिशत दान–खाते में डाल और उसे लोक–कल्याण में व्यय कर। दान से दक्षिणा पानेवाले का तो हित होता ही है, उससे भी अधिक हित और मंगल दाता का होता है, यह वैदिक संस्कृति की भावना है। इसके विपरीत, "अकेला भोग करनेवाला मनुष्य पाप का ही भोग करता है"। ❑

**वेद मंजरी से**

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

# दो रास्ते

● महात्मा आनन्द स्वामी

पिछले अंक में महात्मा आनंदस्वामी जी महाराज की पुस्तक 'दो रास्ते' आरम्भ हुई है। 'दो राते' हैं क्या? इस संदर्भ में एक पथिक की बात सुनाई जिसके मार्ग में एक दोराहा आ गया था। एक ओर मार्ग पर जीवन के सारे आकर्षण थे तथा दूसरी ओर जीवन की सारी कठिनताएँ। उपनिषदों की भाषा में एक 'प्रेयमार्ग' और दूसरा 'श्रेयमार्ग'।

नचिकेता की कथा सुनाते हुए स्वामीजी ने बताया कि उसने यम से तीन वर मांगे। पहला, पिता की अप्रसन्नता दूर हो जाए। दूसरा, स्वंर्ग और मुक्ति का मार्ग क्या है? और तीसरा, आत्मा क्या है? दो प्रश्नों का जवाब देकर, आत्मा की बात को लेकर यम ने इस प्रश्न के बदले में नचिकेता को पृथ्वी की हर वस्तु देने का प्रलोभन दिया परंतु नचिकेता आत्मा की बात सुनने पर ही बजिद्द रहा। दुनिया के सारे प्रलोभन विनाशशील हैं, यह बताने के लिए स्वामी जी ने अपनी अमरीका की यात्रा में एक सज्जन से हुए वार्तालाप को सुनाते हुए कहा कि आज की अशान्ति का कारण दौलत ही है। निर्धन हो जाओ और शान्ति मिल जाएगी, जिसकी सबको तलाश है। यम ने नचिकेता को बताया कि श्रेयमार्ग कल्याण का मार्ग है और प्रेयमार्ग केवल अच्छा ही लगता है। बुद्धिमान व्यक्ति श्रेयमार्ग को अपनाते हैं और बुद्धिहीन व्यक्ति प्रेयमार्ग को, स्वामी जी ने कहा–आज की दुनिया में सब लोग प्रेयमार्ग को अपनाते चले जा रहे हैं। कहीं कोई दुःखों और कष्टों को तप की भावना से सहकर श्रेयमार्ग पर चलना ही नहीं चाहता।

अब आगे......

महाभारत में 'सुन्द' और 'उपसुन्द' की कथा आती है। दोनों सगे भाई थे। हिरण्यकश्यप के वंश में 'निकुम्भ' नाम का राक्षस उनका पिता था। यह वह समय था जब राक्षस हार रहे थे, देवता जीत रहे थे। 'सुन्द' और 'उपसुन्द' ने जब यह अवस्था देखी तो निर्णय किया है कि वे घोर तप करके ब्रह्मा से शक्ति प्राप्त करेंगे। बहुत कठिन तप किया उन्होंने। अन्त में ब्रह्मा ने उन्हें वर दिया– 'तुम दोनों भाई दुनिया में किसी से नहीं हारोगे। तुम दोनों के सामने कोई ठहर नहीं सकेगा। हर जगह तुम दोनों की जीत होगी।'

लो जी, यह वर मिला तो 'सुन्द' और 'उपसुन्द' दोनों ने दुनिया में आफत मचा दी। हर तरफ उन्होंने आक्रमण किए, हर तरफ विजय प्राप्त की। हर किसी को अपना दास बनाना आरम्भ कर दिया। देवता भी उनके सामने हारे। सारी पृथिवी पर राक्षसों का राज हो गया। राक्षसों के घरों में खुशियाँ मनाई जाने लगीं, बाजे बजने लगे, रंग–रलियों की बाढ़ आ गई, बोतलों के कॉर्क खुलने लगे, हर वह बात होने लगी जो राक्षसों को अच्छी लगती थी–

महर्षि के शब्दों में उस समय–

**भक्ष्यतां भुज्यतां चेति दीयतां रम्यतामिति ।**
**गीयतां पीयतां चेति शब्दश्चासीद् गृहे गृहे ।।**

घर–घर में से एक ही आवाज (ध्वनि) आती थी, 'खाओ, पीओ, भोगो, लूटो, गाओ, नाचो, मौज करो!' हर समय यह आवाज आती थी, हर समय यह आवाज गूँजती थी।

और आज हमारी दुनिया में भी वही आवाज गूँज रही है, ''खाओ, पीओ, भोगो, लूटो, छीनो, गाओ, नाचो, मौज मनाओ!'' हर घर में बाजे बजते हैं, रेडियो गाते हैं, ट्रांजिस्टर गाते हैं, टेलिविजन पर नाच होते हैं। बोतलें खुलती हैं। ऐसा जान पड़ता है कि मनुष्य और पशु में कोई अन्तर यदि कहीं रह गया है तो उसको भी हटा देने के यत्न हो रहे हैं।

शराब की बात ही देखिए, हमारे देश में लोग पहले इतनी नहीं पीते थे। स्वराज मिलने के बाद इस बीमारी में बहुत वृद्धि हो गई है। इस देश में स्त्रियाँ शराब नहीं पीतीं थीं, परन्तु पिछले दिन मेलाराम जी ने मुझे बताया कि अब युवतियाँ भी शराब पीने लगी हैं। पार्टियों और क्लबों में ये लड़कियाँ अनोखे प्रकार से शराब पीती हैं। एक स्थान पर पहुचीं, शराब का एक घूँट पी लिया तो अगली कुर्सी पर, तब एक और घूँट लिया और उससे अगली कुर्सी पर, ताकि देखने वाले समझें कि उसने केवल एक घूँट पी है और एक–एक घूँट को पीनेवाली कई ग्लास पी जाती हैं।

परन्तु यहाँ ही क्यों? सारी दुनिया में यही कुछ तो हो रहा है। मैं अमेरिका और यूरोप में झूमकर आया पिछले महीने। अमेरिका बहुत सुन्दर देश है। वहाँ के लोगों में बरतानियावालों की अपेक्षा मानवता अधिक है। उनमें अकड़ नहीं; आतिथ्य–सत्कार की भावना बहुत

thearyasamaj.org



है। राह–चलते लोग भी आपको प्यार से मिलेंगे, मुस्करा के मिलेंगे। आप उन्हें जानते हों या न जानते हों, वे आपका हाल पूछेंगे, आपसे बात करने का यत्न करेंगे। आपको यह भी कहेंगे, 'हमारे घर चलिए, हमारे साथ खाना खाइए। बहुत अच्छे हैं। काम करने वाले समय पर जाते हैं, समय पर वापस आ जाते हैं। बहुत परिश्रम से काम करते हैं। धन खर्च करके चाँद पर दो आदमी भेज दिए। वे वहाँ से कुछ पत्थर उठा लाए, वे भी किसी काम के नहीं।

मैंने कुछ अमेरिकी वैज्ञानिकों से पूछा, ''क्यों जी! चाँद तक आदमी भेजने में इतना धन व्यय करने के पश्चात् मिला क्या है?

वे बोले–''खाक मिली है, खाक और पत्थर।''

वस्तुतः यह धन का सुप्रयोग नहीं। अमेरिका में 23 करोड़ मनुष्य रहते हैं और अमेरिका के ही एक पत्र 'न्यू स्टेट्समैन' की सूचना के अनुसार उनमें से डेढ़ करोड़ मनुष्य भूखे मर रहे हैं। इतना अन्न, इतने उद्योग, इस पर भी डेढ़ करोड़ अमेरिकन यदि भूखे सोते हैं तो क्यों? इसलिए कि अमेरिका के अधिकतर लोगों ने 'प्रेय मार्ग को अपना लिया है। खाते–पीते हैं, मौज मनाते हैं इस बात को भूल गए कि दूसरों के सम्बन्ध में भी कोई कर्त्तव्य है, दरिद्रों तथा दीन–दुःखियों के लिए भी कुछ करना है। खाना–पीना बुरा नहीं। मैं भी खाता हूँ, पीता हूँ। परन्तु आजकल तो पीने का अर्थ कुछ और हो गया है। पीने का अर्थ हो गया है, शराब पीना। मेरे विचार में यहाँ करोलबाग में तो कोई नहीं पीता यहाँ तो शराब की कोई दुकान शायद है नहीं।

एक सज्जन ने कहा–''है, स्वामी जी!

''अब खुल गई है''–स्वामी जी ने पूछा–आजादी के बाद?''

उस सज्जन ने उत्तर दिया, ''जी।''

स्वामी जी हँसते हुए बोले–

स्वातन्त्रता जो मिल गई भाई! यह नहीं होगा तो क्या होगा? गांधी जी कहते थे, स्वराज्य मिलने के बाद दो बातें इस देश से बिल्कुल समाप्त कर दी जाएँगी, एक मद्यपान, दूसरी गोहत्या, और गांधी जी का नाम लेनेवालों ने दोनों में वृद्धि कर दी है।

कांग्रेसवाले नाम लेते हैं गांधी जी का, काम करते हैं सब उनके उलट! आर्यसमाजवाले नाम लेते हैं महर्षि दयानन्द का, काम करते हैं सब–के–सब उनसे उलट!

और ये बोद्ध लोग, हे मेरे भगवान! महात्मा बुद्ध ने कहा था, हिंसा करना ठीक नहीं। और मैं चीन, जापान, ब्रह्मा, थाईलैंड, मलयेशिया, सिंगापुर, तिब्बत–सब जगह हो आया हूँ। बौद्ध लोग प्रत्येक प्राणी को खाते जाते हैं। चार पैरवालों में उन्होंने केवल चारपाई को छोड़ दिया है। उड़ने वालों में केवल हवाई जहाजों को नहीं तो वे सब कुछ खा जाते हैं।

उन पुण्य महात्माओं का नाम तो लेते हैं ये लोग, उनकी बात मानने को तैयार नहीं, उनके दिखाए रास्ते पर चलने को तैयार नहीं।

अमेरिका में भी यही हो रहा है। मैंने आपको 'सुन्द' और 'उप–सुन्द' की बात सुनाई कि उनके समय की तरह आज भी दुनिया में राक्षसज हैं। सब लोग प्रेय मार्ग की ओर दौड़े जाते है।, परन्तु उसका परिणाम क्या है?

अमेरिका मुझे बहुत अच्छा लगा। उसके आकाश को छूते बड़े–बड़े भवन, उसके बड़े–बड़े पुल, उसकी सुन्दर सड़कें, उसके कारखाने, उसके लोग, सब अच्छे हैं। परन्तु इन भवनों, सड़कों आदि सारी चीजों के पीछे क्या हो रहा है, इसका पता अमेरिका के अखबारों से लगता है। अमेरिका की 'लायन क्लब' का एक अखबार है 'लायन' (Lion)। इस पत्र के पिछले वर्ष 1971 के जुलाई अंक में एक सज्जन डॉ. जैनबी रासन हाम ने एक लेख लिखा जिसका शीर्षक था–

Rioting, Burning Bloodshed, Assasination in the United States

अर्थात् अमेरिका में दंगे–फ़साद, आग लगाना, खून, कत्ल'। इस लेख में डॉ. रासन हाम ने कहा कि–अमेरिका के अन्दर अपराधों की संख्या निरन्तर बढ़ती जाती है।

ऐसा ही एक और पत्र है 'अवेक' (Awake)। वह कैथोलिक ईसाइयों का पत्र है। मैं इस पत्र का ग्राहक हूँ, हर मास यह पत्र मेरे पास आता है। मैं इसे अमेरिका की हालत जानने के लिए पढ़ता हूँ। कई भाषाओं में यह पत्र छपता है। सब भाषाओं में मिलाकर यह पत्र 56 लाख छपता है। इस पत्र ने लिखा कि अमेरिका की जनगणना में तो 9 प्रतिशत की वृद्धि हुई है, परन्तु अपराधों की गिनती में 62 प्रतिशत की वृद्धि हुई है।

इस पत्र ने बताया कि पिछले वर्ष में अमेरिका के लोग 21 करोड़ 50 लाख गैलन शराब पी गए। अब यह 'गैलन' कितना होता है, यह तो मुझे पता नहीं। एक सज्जन ने कहा – गैलन 6 बोतल का होता है।

स्वामी जी बोले–एक गैलन में 6 बोतलें होती हैं तो 21 करोड़ 50 लाख गैलन में कितनी हुई, यह हिसाब–किताब जानता नहीं।

(और सच है कि पूज्य स्वामी जी महाराज हिसाब–किताब नहीं जानते। हिसाब न जानने के कारण वे बचपन में स्कूल के अन्दर फ़ेल हो गए। उनके पिता पूज्य लाला गणेशदास जी ले उन्हें स्कूल से उठा लिया, आगे पढ़ाया ही नहीं स्वामी जी उस समय खुशहालचन्द थे, नवयुवक, कसरत के शैकीन, काव्य के दिलदादः, और कहानियों के प्रशंसक। कविताएँ लिखते थे, लिखकर रख देते थे या फाड़ देते थे, क्योंकि ग्राम में उनका कोई मूल्य न था। मेरे पूज्य दादा जी ने यह समझकर कि यह लड़का किसी काम का नहीं, इन्हें सोडा–वाटर की एक मशीन मोल ले दी कि सोडा–वाटर की बोतलें भरो और कुछ कमाओ। यह सब काम चला नहीं तो पूज्य दादा जी ने उन्हें जुरावें बुनने की मशीन मोल ले दी। श्री खुशहालचन्द जी स्वयं भी जुराब बुनते, दूसरे से भी बुनवाते। परिश्रम करने से वे घबराते नहीं थे। परन्तु व्यापार तो हिसाब–किताब से चलता है और खुशहालचन्द जी को हिसाब–किताब में कोई रुचि नहीं थी। तभी डी.ए.वी कॉलिज लाहौर के पहले प्रिंसिपल और आर्य समाज के नेता महात्मा हंसराज जी ग्राम में गए। रात के समय उन्होंने एक लम्बा भाषण दिया। प्रातः समय खुशहालचन्द जी उनके पास पहुँचे; बोले–महात्मा जी, मैने आपके भाषण की रिपोर्ट लिखी है, इसे देख लीजिए। यदि कोई बात ठीक न लिखी गई हो तो उसे ठीक कर दीजिये।

महात्मा जी ने रिर्पोट पढ़ी। सामने बैठे नवयुवक को देखा। चकित होकर बोले – ''तुम क्या शॉर्टहैंड जानते हो?'' नवयुवक ने कहा– ''जी नहीं, मैंने अपनी स्मरणशक्ति से लिखी है यह रिपोर्ट। '' महात्मा जी बोले–''किसके बेटे हो तुम? नाम क्या है तुम्हारा? खुशहालचन्द जी इस बात का उत्तर देते कि इससे पहले मेरे पूज्य दादा जी वहाँ पहुँच गए। वह ग्राम की आर्यसमाज के प्रधान थे। उन्होंने महात्मा जी का सवाल सुना तो दुःख से बोले–''जी, यह मेरा पुत्र है, अयोग्य है, बहुत पढ़ा नहीं।'' महात्मा जी ने सोचते हुए कहा–''यह आपके काम का नहीं, इसे मुझे दे दीजिए।'' पूज्य दादा जी बोले–''आप ले जाइए!'' और कुछ दिनों के बाद महात्मा जी का पत्र आने पर भी खुशहालचन्द जी अपने ग्राम से लाहौर पहुँच गए। महात्मा हंसराज जी को मिले। महात्मा जी ने साप्ताहिक पत्र 'आर्य गजट' के प्रबन्धक को बुलाया; बोले–खुशहालचन्द जी को 'आर्य गजट' में रख लीजिए। यह वहाँ कार्य करेंगे।'' महात्मा जी का तात्पर्य यह था कि खुशहालचन्द जी को 'सहसम्पादक' के पद पर रखा जाए। प्रबन्धक महोदय ने खुशहालचन्द जी को 'आर्य गजट' का कोषाध्यक्ष–क्लर्क बनाकर हिसाब–किताब उनको सौंप दिया। तीस रुपए मासिक उनका वेतन निश्चित कर दिया। खुशहाल चन्द जी डेढ़ मास कार्य किया, तब वे महात्मा जी के पास पहुँचे। बोले मैं त्याग पत्र देने आया हूँ। महात्मा जी ने पूछा क्या होगा। तीस रु. मासिक मेरा वेतन है। पिछले मास हिसाब–किताब में 25 रुपये कम हो गए। अपने वेतन में से 25 रुपये डालकर मैंने हिसाब पूरा कर दिया। इस बार शायद सारा वेतन देकर भी घाटा पूरा नहीं होगा। आजकल मैं चने खाकर पानी पी लेता हूँ। अगले महीने शायद चने भी नहीं मिलेंगे। सच्ची बात तो यह है कि मैं हिसाब–किताब जानता नहीं और प्रबन्धकों ने मुझे हिसाब किताब पर लगा दिया है।'' महात्मा जी ने उसी समय प्रबन्ध करने वाले सज्जन को बुलाकर कहा–''आपको यह किसने कहा था कि इन्हें हिसाब–किताब का काम दीजिये? मैं इन्हें सम्पादक बनाने के लिए इनके गाँव से लाया हूँ। इन्हें सम्पादकीय विभाग में रखिए, आज से ही। इसके बाद जो कुछ हुआ वह दूसरी कहानी है, परन्तु यह सच है कि पूज्य स्वामी जी का हिसाब–किताब से कोई वास्ता नहीं।

बहुत वर्ष पहले की बात है, लाहौर की बात–हमारे घर में घी का एक टीन आया सत्रह सेर घी था। उसका मूल्य 75 रू. था। माता जी ने पूछा, ''यह कितने रुपए का सेर हुआ? पूज्य खुशहालचन्द जी कितनी ही देर तक हिसाब करते रहे, पर कुछ पता नहीं लगा कि एक सेर घी कितने का है। आखिर तंग आकर बोले–देखो! यदि तुम इस आदमी को, जिससे तुमने घी मोल लिया है, दस रु. और दो तो यह घी 5 रु. प्रति सेर हो जाएगा।'')

इसलिए पूज्य स्वामी जी ने कहा, मैं हिसाब नहीं जानता, और बोले–

इस शराब को पीकर जिन प्राइवेट ड्राइवरों ने मोटरें चलाईं, उन्होंने 49 हजार लोगों को मोटरों के नीचे कुचलकर मार डाला। 38 लाख को घायल का डाला। इन घायलों में जो लोग बेकार हो गए, उन्हें हरजाना देने में नौ अरब डॉलर की हानि हुई। इसी पत्र में यह भी लिखा है अमेरिका के अन्दर हर मिनट में एक तलाक होता है।

एक और होटल का वर्णन किया उसने, न्यूयॉर्क के 'न्यू अमेरिका होटल' का। बहुत बड़ा होटल है यह, जैसे दिल्ली में 'अशोक होटल' इस होटल में गरीब (निर्धन) लोग ठहर नहीं सकते, बड़े–बड़े धनवान् ठहरते हैं। ये पत्र कहते हैं कि ''इस होटल में दस महीनों के अन्दर 38 हचार चम्मच, 18 हजार तौलिए, 35 हजार चाँदी के काफी–पॉट चोरी चले गए।'' निर्धनों ने नहीं, धनवानों ने चुरा लिया इन्हें।

इसी पत्र की सूचना के अनुसार एक वर्ष के अन्दर दुकानों से 5 अरब डॉलर का सामान ग्राहक लोग चोरी करके ले गए। एक वर्ष में 50 अरब रु. का जुआ खेला गया। जुआ खेलनेवालों का 'स्वर्ग है' । ऐसा ही अमेरिका की रियासत फ्लोरिडा का समुद्र के किनारे बसा एक नगर। यहाँ प्रतिदिन 25 लाख डॉलर का जुआ होता है। दक्षिणी अमेरिका से होता हुआ मैं वहाँ पहुँचा और इस नगर को देखा तो दिल ही–दिल में सोचा–नगर कितना सुन्दर है, परन्तु इसके अन्दर कुरूपता छुपी बैठी है।

क्रमशः ....

thearyasamaj.org



# पं. गुरुदत्त विद्यार्थी

● डॉ. भवानी लाल भारतीय

जो व्यक्ति विधाता के यहाँ से मात्र छब्बीस वर्ष की अल्पायु लेकर आया हो और इस अत्यन्त संक्षिप्त जीवनविधि में लेखन, शोध व अध्ययन के साथ–साथ शिक्षा तथा समाज सेवा के क्षेत्रों में भी उल्लेखनीय कार्य करे, उसकी प्रतिभा, हिम्मत तथा कार्य–क्षमता की प्रशंसा तो होनी ही चाहिए। पं. गुरुदत्त विद्यार्थी एक ऐसे ही मनस्वी पुरुष थे जिन्होंने अंग्रेज़ी में उत्कृष्ट साहित्य लिखकर स्वामी दयानन्द के वैदिक दृष्टिकोण की न केवल पुष्टि की अपितु पाश्चात्य–विद्वानों पर उसकी छाप छोड़ी। पं. गुरुदत्त का जन्म 26 अप्रैल, 1864 को मुल्तान के एक सद्गृहस्थ लाला राधाकृष्ण के यहाँ हुआ। मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण कर वे उच्च शिक्षा के लिए लाहौर आए और गवर्नमेंट कॉलेज से उन्होंने रसायन शास्त्र विषय लेकर एम. ए. परीक्षा उत्तीर्ण की। उन दिनों विज्ञान के स्नातकों को भी एम. ए. की उपाधि दी जाती थी। आर्यसमाज के सभासद वे मुल्तान में ही बन गए थे।

1883 के अक्टूबर मास में महर्षि दयानन्द के अत्यन्त रुग्ण होकर अजमेर आने का समाचार लाहौर की आर्यसमाज को मिला तो यहाँ के आर्यों ने स्वामीजी की सेवा शुश्रूषा के लिए अपने दो सभासदों को अजमेर भेजा। इनमें प्रथम थे लाला जीवनदास और उनके साथ गए थे पं. गुरुदत्त, जिनकी आयु उस समय मात्र उन्नीस साल की थी।

पं. गुरुदत्त ने परम आस्तिक स्वामी दयानन्द के महाप्रयाण को प्रत्यक्ष देखा। उन्होंने अनुभव किया कि सच्चा ईश्वर–विश्वासी और लोकहित के लिए समर्पित महापुरुष कितना निःस्पृह होकर भौतिक शरीर का परित्याग कर देता है। लाहौर की आर्यसमाज ने महर्षि की स्मृति में दयानन्द ऐंग्लो–वैदिक कॉलेज की स्थापना का निश्चय किया और इसे क्रियान्वित करने के लिए धन संग्रह का अभियान चलाया। पं. गुरुदत्त इस कार्य के लिए अग्रणी रहे और देश के विभिन्न भागों में जाकर प्रचुर धनराशि एकत्र की। वे जहाँ–जहाँ जाते आर्यसमाज के मंच से प्रवचन करते और वेद का संदेश देते। उन दिनों उच्च शिक्षित, सुपठित व्यक्ति के लिए उच्च सरकारी सेवा में प्रवेश पाना कठिन नहीं था, किन्तु गुरुदत्त ने अपने जीवन को धर्म और समाज की सेवा में अर्पित कर दिया था। 1887 में जब गवर्नमेंट कॉलेज लाहौर के विज्ञान के प्रोफेसर जे. सी. ओमन लम्बे अवकाश पर गए, तो पं. गुरुदत्त को कुछ काल के लिए उनके स्थानापन्न होकर अध्यापन का कार्य मिला। 1889 में वे नवस्थापित डी.ए.वी. कॉलेज में अवैतनिक रूप से गणित एवं विज्ञान पढ़ाने लगे। इसके अतिरिक्त उन्होंने कोई नौकरी नहीं की।

पं. गुरुदत्त ने स्वाध्याय के बल पर संस्कृत व्याकरण पढ़ा और अष्टाध्यायी पर असाधारण अधिकार प्राप्त कर लिया। आयु में उनसे बड़े स्वामी स्वात्मानन्द, स्वामी महानन्द तथा स्वामी अच्युतानन्द शिष्य बन कर उनसे व्याकरण का अध्ययन करने लगे थे। वे जितने मेधावी, प्रबुद्ध तथा समर्पित व्यक्तित्व के धनी थे, स्वास्थ्य तथा शरीर के प्रति उतने ही लापरवाह थे। नतीजतन शरीर की ओर ध्यान न देने, स्वास्थ्य के नियमों का पालन न करने तथा अस्त–व्यस्त दिनचर्या ने इस युवा मुनि को अकाल–कवलित कर लिया। उन्हें भयंकर क्षय रोग ने धर दबाया। स्वास्थ्य सुधार के लिए मरी (पाकिस्तान) जैसे रम्य पर्वतीय स्थल पर जाने से भी उनके स्वास्थ्य में कोई सुधार नहीं हुआ। अन्ततः 19 मार्च, 1890 को पं. गुरुदत्त ने परलोक के लिए प्रस्थान किया।

विज्ञान के विद्वान् होने पर भी पं. गुरुदत्त की वेदाध्ययन में गहरी रुचि थी। उन्होंने 'रिजेनेरेटर आफ आर्यावर्त' नामक पत्र निकालना आरम्भ किया। इसमें उनके शोध पत्र छपने लगे जो वेद और वेदार्थ, आर्य सभ्यता और दर्शन तथा ऋषि दयानन्द के मन्तव्यों एवं दर्शन से सम्बन्धित होते थे। कालान्तर में ये शोध–निबन्ध पुस्तकाकार छपे और वेद–विषयक शोधार्थियों में चर्चा और आलोचना (समीक्षा) के विषय बने। इन शोध पत्रों में 'दि टर्मिनोलोजी आफ दि वेदाज्' (1888) विशेष चर्चित हुआ। इसका दूसरा भाग *'दि टर्मिनोलोजी आफ दि वेदाज्'* (1888) विशेष चर्चित हुआ। इसका दूसरा भाग *'दि टर्मिनोलोजी आफ दि वेदाज् एण्ड यूरोपियन स्कालर्स* 1889 में प्रकाशित हुआ। वेदार्थ विषयक यह एक गंभीर शोध पत्र था, जिसमें प्रो. मोनियर विलियम्स तथा अन्य पाश्चात्यों द्वारा किये किये गए वेदार्थ की त्रुटियों की विवेचना की गई थी। *'वैदिक संज्ञा विज्ञान'* को ऑक्सफार्ड विश्वविद्यालय में डिग्री कक्षा के पाठ्यक्रम में सम्मिलित कर लिया गया। किसी भारतीय विद्वान् की कृति को यहाँ के पाठ्यक्रम को यहाँ के पाठ्यक्रम में स्थान मिलने का यह प्रथम अवसर था।

पं. गुरुदत्त ने कुछ गंभीर दार्शनिक विषयों पर विवेचनात्मक निबन्ध लिखे थे। इनमें उल्लेखनीय है। *एविडेन्स आफ ह्यूमन स्पिरिट* (2 भाग) जीवात्मा के अस्तित्व के प्रमाण, *रियेलिटीज ऑफ इनर लाइफ* (आन्तरिक जीवन की वास्तविकता), *धन की डाह* (Pecuniomania)। उन्होंने ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय की वैदिक पीठ के प्रोफेसर मोनियर विलियम्स के प्रसिद्ध ग्रन्थ, *इण्डियन विज़्डम* की आलोचना लिखी जो उनकी मृत्यु के बाद 1893 में छपी। पादरी टी. विलियम्स ने जब नियोग प्रथा पर आक्षेप किए तो पण्डित जी ने उसका सतर्क उत्तर दिया। *'ए रिप्लाई टु मि. विलियम्स क्रिटिसिज़्म ऑन नियोग'* शीर्षक से यह शोधपत्र 1890 में छपा। पं. गुरुदत्त का वेद और वैदिक साहित्य विषयक लेखन कार्य भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं था। ईशावास्योपनिषद् का अंग्रेज़ी अनुवाद 1888 में छपा। मुण्डक तथा माण्डूक्योपनिषद् पर उनकी विद्वत्तापूर्ण व्याख्याएँ प्रथम वैदिक मैगजीन में 1889 में छपीं, पश्चात् इन्हें पुस्तकाकार छापा गया। ओंकार की विवेचना में प्रणीत माण्डूक्यो पनिषद् जैसे अल्पकाय किन्तु गूढ़ार्थ वाले उपनिषद् की सरस एवं भावपूर्ण व्याख्या कर पं. गुरुदत्त ने इसे सुबोध बना दिया है अन्यथा यह उपनिषद् सामान्य पाठकों के लिए दुर्बोध है।

विज्ञान के विद्वान होने के कारण पं. गुरुदत्त ने वेद मन्त्रों के वैज्ञानिक अर्थ करने में रुचि दिखाई। यदि वे कुछ अधिक काल तक जीवित रहते तो वेदों के वैज्ञानिक अर्थ करने की दयानन्द प्रतिपादित परिपाटी को बल मिलता। तथापि उन्होंने वैदिक टैक्स्ट्स शीर्षक से तीन लघु निबन्धों में ऋग्वेद (1/219; 1/27 तथा 1/50/13 के मन्त्रों के भौतिक विज्ञानपरक अर्थ किए। ये लघु पुस्तिकाएँ *'दि एट्मोस्फियर', 'दि कम्पोजीशन ऑफ वॉटर'* तथा *'गृहस्थ'* शीर्षक से छपीं। इन पुस्तिकाओं की उपयोगिता का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती ने इनके हिन्दी अनुवादों को 1894 में प्रकाशित किया।

पं. गुरुदत्त ने कुछ ऐसे निबन्ध लिखे जो शोध तथा विवेचन की दृष्टि से उच्चस्तरीय ठहराए गए। इनमें प्रमुख थे। (1) ब्रह्मसमाज के सन्दर्भ में आत्मा की साक्षी (Conscience) और वेद (2) पंजाब के एक ब्राह्मण द्वारा धार्मिक विषयों पर लिखे गए निबन्धों की समीक्षा (3) स्वामीजी के वेद भाष्य की आलोचना का उत्तर (4) मानवी चिन्तन और भाषा की उत्पत्ति (5) मानव की अधोगामी उन्नति (6) माँसाहार का औचित्य या अनौचित्य (7) टी. विलियम्स द्वारा 'वायुमण्डल' शीर्षक वैदिक निबन्ध की आलोचना (8) टी. विलियम्स के 'वेदों में मूर्तिपूजा' शीर्षक लेख का प्रतिवाद (9) मि. फ्रैडरिक पिंकाट के वेद विषयक लेख का उत्तर।

पं. गुरुदत्त के लेखन की गुरुता तथा उनके पाण्डित्य की महत्ता का अनुभव कर उनके निधन के पश्चात् उनके सम्पूर्ण साहित्य को ग्रन्थाकार प्रकाशित करने के गंभीर प्रयत्न किए गए। उनके वरिष्ठ साथी लाला जीवनदास ने उनके समग्र लेखन को जीवनी के साथ 1897 में प्रकाशित किया। इसके दो संस्करण 1902 तथा 1912 में छपे। पं. सन्तराम तथा पं. भगवद्दत्त ने सम्मिलित रूप से गुरुदत्त की सम्पूर्ण लेखावली का हिन्दी अनुवाद किया जो महाशय राजपाल द्वारा 1918 में छापा गया। पण्डित जी के सहपाठी तथा मित्र लाला लाजपतराय ने उनकी मृत्यु के तुरन्त बाद उनका जीवनचरित अंग्रेज़ी में लिखा जिसका हिन्दी अनुवाद इन पंक्तियों के लेखक ने 1990 में किया। डॉ. रामप्रकाश ने पं. गुरुदत्त का शोधपूर्ण जीवनचरित लिखा है जो 1969 में प्रथम बार छपा। कुछ समय पूर्व उन्होंने 'कम्पलीट वर्क्स ऑफ पं. गुरुदत्त' का एक संशोधित–सम्पादित संस्करण प्रकाशित किया है। पं. गुरुदत्त विद्यार्थी पंजाब के प्रथम विज्ञान स्नातक थे। उनकी स्मृति में पंजाब विश्वविद्यालय के रसायन विज्ञान विभाग के हॉल को **'पं. गुरुदत्त हॉल ऑफ कैमिस्ट्री'** का नाम प्रदान किया गया है।

**1883 के अक्टूबर मास में महर्षि दयानन्द के अत्यन्त रुग्ण होकर अजमेर आने का समाचार लाहौर की आर्यसमाज को मिला तो यहाँ के आर्यों ने स्वामीजी की सेवा शुश्रूषा के लिए अपने दो सभासदों को अजमेर भेजा। इनमें प्रथम थे लाला जीवनदास और उनके साथ गए थे पं. गुरुदत्त, जिनकी आयु उस समय मात्र उन्नीस साल की थी।**

# उत्कृष्ट शङ्का समाधान

● स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक

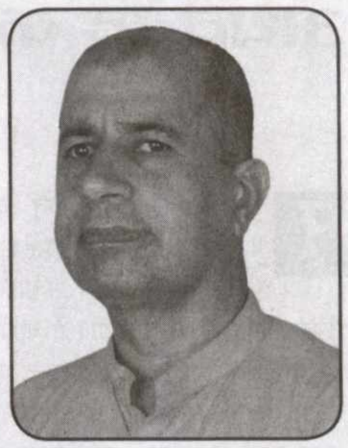

**शंका–सृष्टि का प्रयोजन जीवात्माओं को लौकिक सुख और मोक्ष का सुख देने के लिए है। किन्तु योग–दर्शन में कहा गया है कि लौकिक सुख, दुःख से मिश्रित है, इसलिए लौकिक सुख हेय–कोटि में आते हैं। इस विरोधाभास को सुलझाने का प्रयत्न करें?**

**समाधान–** शास्त्रों में यह बात कही गई है कि संसार, लौकिक सुख के लिए और मोक्ष प्राप्ति के प्रयोजन से बनाया गया है। योगदर्शन में भी कहा गया है कि जो संसार का सुख है, वह में शुद्ध सुख नहीं है। उस सुख दुःख मिश्रित है। इसमें थोड़ा विरोधाभास जैसा प्रतीत होता है। यह प्रश्न है।

**इसका समाधान यह है कि–**

एक व्यक्ति को भूख लगी थी, उसने अच्छी तरह से पेट भरकर खाना खा लिया। दूसरा व्यक्ति अभी भूखा बैठा है, उसने अभी खाया नहीं। दोनों के सामने फिर से भोजन रख दिया जाए, तो दोनों व्यक्ति अलग–अलग व्यवहार करेंगे। जो खा चुका है, वो तो नहीं खाएगा। और जिसने नहीं खाया, वो खाएगा। वही भोजन, एक जैसा भोजन, एक व्यक्ति खा रहा है, लेकिन दूसरा नहीं खा रहा है। क्योंकि उन दोनों की आवश्यकता अलग–अलग है। जो खा चुका, उसका पेट भर गया, इसलिए अब वो नहीं खाएगा। और जिसको भूख लगी है, खाना नहीं खाया है, वो खाएगा।

इसी प्रकार से संसार में जो सुख है, वो दुःख से मिश्रित है, यह बात बिल्कुल सत्य है। लेकिन व्यक्ति का ज्ञान–विज्ञान का जो स्तर है, वो अलग–अलग है। एक व्यक्ति कहता है कि मुझे सुख चाहिए। इन्द्रियों से जो भोगा जाता है, मुझे तो वो लौकिक सुख चाहिए। जैसे–खाना, पीना, घूमना, फिरना आदि, इन चीजों से जो सुख मिलता है, वो मुझे चाहिए। इससे स्पष्ट है कि उस व्यक्ति को संसार में केवल सुख ही दिखता है, दुःख दिखता ही नहीं।

यद्यपि संसार में सुख भी है और दुःख भी है। लेकिन उसको केवल सुख ही दिखता है। अब यहाँ पर दृष्टिकोण का अन्तर है। जिसको संसार में सुख ही दिखता है, वो उस सुख को भोगेगा। लेकिन जिसका ज्ञान बदल गया, उसको दुःख भी दिखने लगा तो वो भोगना बंद कर देगा। अब वह बोलेगा– ये नहीं चाहिए। मुझे शुद्ध सुख चाहिए, लेकिन यह सुख, दुःख मिश्रित है। यह बात मुझे समझ में आ गई'' इसलिए अब वो उस सुख को नहीं भोगेगा।

जब लोग कहते हैं कि हमको प्राकृतिक सुख चाहिए, तो भगवान तो फिर देने वाला है न । वो तो यह सृष्टि बनाकर देगा ही। शास्त्रों में यह जो कहा कि लोकिक सुख भोगने के लिए यह संसार बनाया गया। उसका अर्थ है कि हम सांसारिक सुख–दुःख को भोगने वाले, सकाम कर्म कर चुके हैं। उन कर्मों का फल भोगना है। आपने ऐसे कर्म किए। इसलिए उसका सुख भोगो, खाओ–पिओ, घूमो–फिरो, सभी इन्द्रियों का सुख लो। पिछले कर्मों का फल भोगने के लिए यह संसार बनाया। जैसा कर्म है, वैसा ही तो ईश्वर फल देगा। अच्छे कर्म किए, उसका सुख ले लो, बुरे कर्म किए उसका दुःख भी भांगो। और खाते –पीते, भोगते आपको जब इस सांसारिक सुख में दुःख दिखने लगे, तब इसको छोड़ देना और मोक्ष को पकड़ लेना । तब आपका लक्ष्य बदल जाएगा। पर जब तक आपको इसमें दुःख नहीं दिखता, तब तक यही आपका लक्ष्य है।

एक उदाहरण से बात और समझ में आएगी। मान लीजिए कि कोई व्यक्ति अहमदाबाद में एक बहुत अच्छी हलवाई की दुकान से कोई बढ़िया सी मिठाई लेकर आए और प्लेट में आपके सामने रख दे। और बोले–'' लो जी खाओ,बड़ी स्वादिष्ट, सुगंधित और देखने में भी सुन्दर मिठाई है।'' आपको उसमें सुख दिखता है, इसलिए अब आपने उसे खाने के लिए हाथ बढ़ाया। इतने में उस दुकान का एक नौकर, दौड़ता–दौड़ता आया, और कहने लगा–''ठहरो.....ठहरो....ठहरो, जो मिठाई आप हमारी दुकान से लाए हैं, उस मिठाई में थोड़ा सा पौटेशियम सायनाइड मिला है।'' अब बताइए, क्या आप मिठाई खा सकते हैं? अब आपको क्या दिखने लग गया? अब आपको उसमें दुःख दिखने लग गया। पहले सुख दिख रहा था। प्लेट वही, मिठाई वही, केवल आपका विचार, आपका ज्ञान और आपकी दृष्टि बदल गई। पहले जो चीज आपको सुखदायी दिख रही थी, वही अब दुःखदायी दिख रही है। इसलिए अब आप उसे नहीं भोगेंगे। आप कहेंगे यह दुःख मिश्रित मिठाई है, हमें यह नहीं चाहिए। हो सकता है आप तीव्रता से, उग्रता से उसका नाम ही बदल दें। आप कहेंगे–यह मिठाई नहीं है, यह तो जहर है। कोई कहेगा–'' भाई! जहर क्यों बोलते हो, यह मिठाई ही तो है। आप कहेंगे–'' श...श... मिठाई का नाम मत लो, इसे जहर बोलो। जहर बोलेंगे, तो इच्छा नहीं होगी, छूट जाएगी। मिठाई बोलेंगे, तो खाने की इच्छा होगी। फिर खाएँगे, फिर परिणाम भोगना पड़ेगा।

इस प्रकार जिस व्यक्ति की मिठाई खाने की इच्छा है, उसको पता नहीं कि इसमें पौटेशियम सायनाइड है, वो खाएगा और मरेगा। जिसको मालूम है कि इसमें पोटैशियम सायनाइड है, न खाएगा, न मरेगा, वह तो बच जाएगा।

संसार के इन्द्रियों से भोगे जाने वाले जो भी लौकिक–सुख हैं, ये दुःख से मिश्रित हैं। इनमें दुःख का जहर मिला हुआ है। जिसको वो जहर नहीं दिखता है, जिसको वो दुःख नहीं दिखता है, वो इनका सुख भोगेगा, और इसलिए उसे दुःख भी भोगना होगा। वो मिठाई भी खाएगा और जहर भी खाएगा।

भगवान ने तो उनको सावधान कर रखा है– 'ऐ भाई, इनके पीछे मत पड़ो, नहीं तो तुम्हें परिणाम में दुःख भोगना पड़ेगा। एक सुख के बदले चार–चार दुःख भोगने पड़ेंगे।'' अब लोग न पढ़ें, न सुनें, इस बात पर ध्यान न दें, तो भगवान क्या करे? उसका दोष थोड़े ही है, यह लोगों का दोष है।

यदि वेद–शास्त्रों को पढ़ेंगे तो पता चलेगा कि उसमें मोक्ष को ही अंतिम लक्ष्य बताया है, कोई और लक्ष्य बताया ही नहीं। अब मोक्ष वाले निष्काम कर्म करो, तो ईश्वर आपको मोक्ष का सुख भी देंगे।

लोगों की योग्यता कम है, लोगों के ज्ञान का स्तर कम है, इसलिए उन्हें ऐसा लगता है कि खाने–पीने में बड़ा सुख है। इसलिए वे खाने–पीने के भौतिक–सुखों के पीछे पड़ जाते हैं।

एक और उदाहरण देता हूँ। जब हम छोटे बच्चे थे, तो हमारी खुशी के लिए हमारे–पिता क्या करते थे? छोटे–छोटे खिलौने लाकर देते थे। बच्चा उन खिलौनों से खेल सकता है, और उसमें खुश हो सकता है। मगर बीस साल के जवान को वही गुढडे–गुड़िया वगैरह दो, तो क्या वह उनसे खेलेगा, और उनसे खुश हो जाएगा? नहीं होगा। वे खिलौने छोटे बच्चे को प्रसन्न कर सकते हैं युवा और वृद्ध व्यक्ति को प्रसन्न नहीं कर सकते। इसी तरह से जो ज्ञान की दृष्टि से छोटा है, ज्ञान का स्तर जिसमें कम है, जिसको संसार में सुख दिखता है, उसको तो ये संसार की वस्तुएँ सुख दे सकती हैं, बिल्कुल खिलौनों की तरह। जिसका ज्ञान विकसित हो गया, वो बीस साल का युवा व्यक्ति जैसा हो गया। खाना–पीना, घूमना–फिरना, गप–शप मारना, संगीत सुनना, इसमें जो सुख ले रहे हैं, यह तो बच्चों की खिलौनों वाली बात है। हमारी उम्र बीस साल की हो गई, अब ये खिलौने हमको खुश नहीं कर सकते हैं। अब तो हमको भगवान का सुख चाहिए। यह दुनियाँ का सुख तो बच्चों के खिलौने वाला जैसा सुख है। यह हमको नहीं चाहिए। हमको ये चीजें ज्यादा आकर्षित नहीं कर सकतीं। यह ज्ञान के स्तर की बात है।

जिस–जिस व्यक्ति को यह समझ में आ जाता है कि ये संसार के सुख, खिलौनों की तरह हैं,अब मुझे ये नहीं चाहिए, मैं इनसे थक गया हूँ, मुझे तो ईश्वर का मोक्ष वाला सुख चाहिए। वह सांसारिक सुख भोगना छोड़ देता है। जब सांसारिक सुख छोड़ देता है, तो उसके साथ जो दुःख मिल रहा था, वह भी छूट जाता है। फिर वो ईश्वर को पकड़ता है और समाधि लगाकर मोक्ष में चला जाता है।

इस तरह ईश्वर ने पिछले कर्मों का फल भुगवाने के लिए और मोक्ष की प्राप्ति कराने के लिए यह सृष्टि बनाई।

**दर्शन योग महाविद्यालय**
**रोजड़ (गुजरात) –383307**

यद्यपि संसार में सुख भी है और दुःख भी है। लेकिन उसको केवल सुख ही दिखता है। अब यहाँ पर दृष्टिकोण का अन्तर है। जिसको संसार में सुख ही दिखता है, वो उस सुख को भोगेगा। लेकिन जिसका ज्ञान बदल गया, उसको दुःख भी दिखने लगा तो वो भोगना बंद कर देगा। अब वह बोलेगा– ये नहीं चाहिए। मुझे शुद्ध सुख चाहिए, लेकिन यह सुख, दुःख मिश्रित है। यह बात मुझे समझ में आ गई'' इसलिए अब वो उस सुख को नहीं भोगेगा।

hearyasamaj.org



# अथर्ववेद का राहू–केतु आख्यान और उसका निहितार्थ

● डॉ. सुरेन्द्र कुमार

सूर्य–चन्द्र से राहू केतू की शत्रुता या उनको हानि पहुँचाने की प्रवृत्ति का ज्ञान सर्वप्रथम स्पष्टरूप में वाल्मीकि–रामायण में वर्णित हुआ है। वहाँ बताया गया है कि एक ग्रह है, जो सूर्य और चन्द्रमा को समय–समय पर ग्रस लेता है। इसके अतिरिक्त दो अन्य काण्डों के उल्लेखों से भी इसी शत्रुता का ज्ञान होता है। वहाँ उदास मुख को राहुग्रस्त चन्द्र के समान बताया है। उत्तरकाण्ड में आता है कि राहू सूर्य को ग्रहण लगाना चाहता था तो हनुमान उस पर झपटा। राहु भयभीत होकर वहाँ से भागा और इन्द्र–शरण में आया। इसने इन्द्र को बताया तो इन्द्र ने एक दूसरे राहु के रूप में हनुमान पर आक्रमण के लिए प्रस्थान किया। इन्द्र द्वारा राहु के कहने पर हनुमान पर वज्रप्रहार करने से वायु इन्द्र से कुपित हो गया। इसके पश्चात् इनकी शत्रुता का वर्णन समुद्रमंथन प्रसंग में महाभारत में आता है।

'महाभारत' में समुद्रमंथन की घटना का वर्णन हो चुकने के उपरान्त जब मोहिनी रूपधारी विष्णु द्वारा अमृत पिलाने का प्रसंग उपस्थित होता है, तब इस आख्यान का उल्लेख हुआ है। विष्णु केवल देवताओं को ही अमृत पिलाये जा रहे थे। और दानव उनके इस अन्याय को टुकुर–टुकुर ताक रहे थे। राहू नामक एक दानव से यह न देखा गया, उसने माया शक्ति से देवता का रूप बनाया और देवताओं में आ मिला। विष्णु ने उसे भी अमृत दे दिया और उसे पीने भी लगा। किन्तु अमृत अभी उसके कण्ठ तक ही पहुँचा था कि सूर्य और चन्द्रमा की शिकायत पर विष्णु भगवान् ने अपने चक्र से उस दानव का सिर काट दिया। चूँकि अमृत की बूँदे धड़ तक नहीं पहुँची थी, इसलिए धड़ तो मृत होकर पृथ्वी पर आ गिरा, किन्तु अमृत पी लेने के कारण राहु का सिर अमर हो गया। वह भयंकर सिर सूर्य और चन्द्रमा से उसी दिन से वैर मानने लगा और इसलिए वह आज भी दोनों पर ग्रहण लगाता है।

**हिन्दी–काव्यों में चन्द्र–सूर्य और राहु–केतु का आख्यान**

हिन्दी काव्यों में इस आख्यान को स्वतन्त्र रूप में या पुराणों की पद्धति से तो कहीं वर्णित नहीं किया है, हाँ, इनकी प्राकृतिक प्रक्रिया का आलंकारिक रूप में बहुत उल्लेख हुआ है। राहु–केतु को आसुरी प्रवृत्ति माना गया है।

ज्ञानदीप[4] में चन्द्रमा पर राहु की कुदृष्टि पड़ने का उल्लेख हुआ है। चन्द्र को ग्रसने की राहु की प्रवृत्ति को पद्मावत विद्यापति की पदावली में अनुचित माना है। सूरसागर में किसी नारी का राक्षस के हाथ में पड़ना, चन्द्रमा का राहु के वश में होने के समान माना है। इसी प्रकार राहु द्वारा ग्रहण लगाने की निन्दा का वर्णन, रामचरित मानस में लगभग दस स्थलों पर हुआ है।

कबीर ने राहु–केतु द्वारा भानु–शशि को ग्रसे जाने को कर्मों की गति ओर विधि का ऐसा विधान माना है, जिसे टाला नहीं जा सकता। ऐसा भाव उनके कई पदों में आया है।

हिन्दी के अन्य अनेक काव्यों में राहु–केतु द्वारा चन्द्र और सूर्य को ग्रसित किये जाने का आलंकारिक रूप में उल्लेख है। 'द्रोपदी' में उदाहरण के रूप में, 'रुक्मिणी–परिणय' में राहु द्वारा अकारण सूर्य को ग्रसने पर विभावना–रूप में, तथा रुक्मिणी की माँग का वर्णन करते हुए चन्द्र को ग्रसित करने के इच्छुक राहु को रोकने के लिए उत्प्रेक्षा के रूप में और कृष्ण–शिशुपाल युद्ध में कटे हुए सिरों के लिए उपमान के रूप में ब्रजचन्द्र विनोद में होनी की प्रबलता को प्रदर्शित करने के लिए अर्थान्तरन्यास के रूप में, 'देवकी' में कृष्ण रूपी चन्द्र को राहुरूपी कंस से वसुदेव द्वारा बचाये जाने पर रूपकातिशयोक्ति अलंकार के रूप में राहु और केतु का उल्लेख हुआ है।

इनके अतिरिक्त 'सेनापति कर्ण' में संदेहालंकार के साथ–साथ कुरुकुलीय भीष्म के लिए सूर्य और शिखण्डी के लिए राहु का रूपक प्रस्तुत किया गया है। 'सुवर्ण' में भी राहु का रूपकालंकार में उल्लेख है। 'कृष्णयान' और द्वारका प्रवेश में काव्यलिंग अलंकार का प्रयोग करके कवियों ने वर्णित किया है कि चन्द्रग्रहण का कारण चन्द्र की मृदुता है। कृष्ण चन्द्र हैं, और यवनेश राहु है। 'पुरुषोत्तम' में रुक्मिणी को शिशुपाल द्वारा पीड़ित करने की समानता राहु के दृष्टान्त से प्रदर्शित की है। 'उदाहरण' में रूपक और उत्प्रेक्षा अलंकारों के द्वारा राहु का वर्णन है। 'रश्मिरथी' में द्रोणाचार्य द्वारा आपत्ति के प्रतीकरूप में राहु का स्मरण है।

**चन्द्र–सूर्य और राहु–केतु के आख्यान का स्रोत एवं विकास**

**वेदों एवं वैदिक साहित्य में चन्द्र–सूर्य और राहु–केतु आख्यान–**

प्राकृतिक दृश्यों एवं पदार्थों का मानवीकरण करके किसी सन्देश या स्थिति को प्रस्तुत करना वेदों की अपनी प्रमुख शैली है। यह आख्यान भी उसी कोटि के अन्तर्गत आता है। इसका मूल स्रोत अथर्ववेद के एक मन्त्र में पाया जाता है। जहाँ राहु–केतु के प्रभाव से ''शम्'' की कामना की गयी है। इस वर्णनशैली से यह संकेत मिलता है कि वेद में इन्हें अशुभ और आसुरी प्रवृत्ति के गृह का स्वरूप प्रदान किया गया है। परवर्ती काल में यही राहु–केतु, मानवीकरण होते–होते दो असुर ही बन गये, जो उज्ज्वल, पवित्र, जनतिहकर सूर्य–चन्द्र सदृश्य देवों को ग्रसते रहते हैं, हानि पहुँचाते रहते हैं। इनके साहित्य में इनका आलंकारिक रूप में पर्याप्त वर्ण किया गया है। इस आख्यान का मूलस्रोत रूप मन्त्र निम्न है–

शं नो ग्रहाश्चान्द्रमसाः शमादित्यश्च राहुणा।

शं नो मृत्युर्धूमकेतुः शं रुद्रास्तिग्मतेजसः ।।

–अथर्व0 19.9.10

अर्थात्–चन्द्रमा से सम्ब) ग्रह, आदित्य के साथ राहु, मृत्युरूप धूमकेतु, विनाशकारी और तीक्ष्ण तेज वाले ग्रह हमारे लिए शान्तिदायक–कल्याणकारक हों।

**वैदिक साहित्य में चन्द्र–सूर्य और राहु–केतु का आख्यान–**

ऋग्वेद में ''स्वर्भानु'' नामक एक असुर का निर्देश प्राप्त होता है, जो सूर्य के प्रकाश को रोक लेता है। इसने सूर्य को अन्धकार से आवृत्त कर लिया, तब सारी सृष्टि दीन–हीन अवस्था को प्राप्त हो गयी। ब्राह्मणग्रन्थों के अनुसार, सामदेव के मन्त्रगान ने इस ग्रहण को दूर किया। साथ ही अत्रि, सोम और रुद्र द्वारा भी इस ग्रहण से सूर्य को मुक्त कराने का उल्लेख है ऐसा समझा जाता है कि स्वर्भानु ने ही परवर्ती साहित्य में राहु–केतु का रूप धारण कर लिया। भागवत में इसे चन्दार्कपमर्दन तथा ब्रह्मकाण्ड में इसे स्वर्भानु नाम से ही पुकारा गया है। कौशिक सूत्र में भी राहु का आसुरी रूप प्रदर्शित है।

**लौकिक संस्कृत–काव्यों में चन्द्र–सूर्य और राहु–केतु आख्यान**

लौकिक काव्यों में आते–आते राहु–केतु का प्राकृतिक स्वरूप मानवीय स्वरूप में मिश्रित हो चुका है और पुराणों में तो इन्हें ग्रहों की अपेक्षा असुर या दैत्यविशेष के रूप में अधिक प्रस्तुत किया गया है। पुराणों में राहु–केतु को दनु और कश्यप का पुत्र माना है। विष्णुधर्म पुराण में ब्रह्मा के प्रतप्त दीर्घ निःश्वास से धूमकेतु की उत्पत्ति कही है। अन्यत्र इसे कश्यप और सिंह का पुत्र कहा है। भागवत एवं ब्रह्माण्ड में इसे विप्रचित्ति एवं सिंहिका का पुत्र कहा गया है। यद्यपि यौगिक दृष्टि से इन्हें प्रजापति और प्रकृति, सूर्य और पृथिवी भी माना गया है, अतः पुराणों के इस वर्णन को इन्हीं अर्थों का बोधक मानने में कोई आपत्ति उपस्थित नहीं होती। पुराणों की शैली ही इस प्रकार की है कि वे इनका वर्णन मानव घटना के सदृश करते हैं, अतः इनमें व्यक्तित्व का आभास प्रमुखता से होने लगता है।

वाल्मीकि–रामायण और महाभारत में वर्णित राहु केतु की घटनाएं आख्यान के प्रारम्भ में उद्धृत की जा चुकी है। इनमें स्पष्टतः इन ग्रहों को मानवों से सम्बद्ध कर दिया गया है। कहीं–कहीं इन प्राकृतिक पदार्थों का केवल मानवीकरण ही है।

''ब्रह्मवैवर्त पुराण'' में चन्द्रमा के राहु ग्रस्त होने का कारण देवगुरु बृहस्पति की पत्नी तारा द्वारा चन्द्रमा को दिया गया शाप बताया है। कथा इस प्रकार है–भाद्रपद शुक्ला चतुर्थी को गुरु–पत्नी तारा मन्दाकिनी नदी में स्नान कर रही थी। वहीं से चन्द्रमा ने उसका हरण कर लिया। तारा ने उसको बहुत समझाया कि ब्राह्मणी और गुरुपत्नी होने के नाते मैं तुम्हारी माता–तुल्य हूँ, गुरुपत्नी–गमन से सौ ब्रह्म–हत्या का पाप लगता है। किन्तु चन्द्रमा ने उसे नहीं छोड़ा। जब वह उसे भोगने को उद्यत हुआ, तब तारा ने उसे शाप दिया कि तुम कलङ्की यक्ष्मा से पीड़ित तथा राहुग्रस्त होओगे। चन्द्रमा ने रोती हुई तारा को गोदी में बिठाकर नाना नदी, नद तथा पर्वतों में रमण किया।

परन्तु ब्रह्मवैवर्त पुराण'' में सूर्य के राहु ग्रस्त होने का कारण जमदग्नि ऋषि द्वारा उसका शापित होना बताया गया है। कथा इस प्रकार है–''एक समय परशुराम के पिता जमदग्नि ऋषि रेणुका के साथ नर्मदा तट पर दिन में सहवास कर रहे थे। वह देख, सूर्य ने कहा कि ऋषि! आप ब्रह्मा के प्रपौत्रा हैं, वेदों के ज्ञाता हैं, आप धर्म का त्याग क्यों कर रहे हैं? क्योंकि दिन में मैथुन को शास्त्रों में वर्जित माना है। सूर्य के टोकने पर जमदग्नि ने मैथुन तो त्याग दिया पर सूर्य पर बहुत रुष्ट हुए और कहने लगे कि मेरे आगे पाणिडत्य और शास्त्र–ज्ञान बघारने वाला तू कौन है? जमदग्नि ने क्रुद्ध होकर सूर्य को शाप दिया कि चूँकि तुमने हमारा रस–भंग किया, अतः तुम राहु–ग्रस्त होओगे। सूर्य ने भी जमदग्नि को शाप दिया कि क्षत्रिय के शस्त्र से तुम्हारा मरण होगा। दोनों का कलह देख ब्रह्मा ने बीच–बचाव किया और सूर्य से कहा कि न्यून एवं अधिक वर्ष में ही तुम राहु–ग्रस्त होओगे और वह

शेष पृष्ठ 8 पर ☞

thearyasamaj.org



# स्वामी दयानन्द ने वेद प्रचार को क्यों चुना?

● मनमोहन कुमार आर्य

स्वामी दयानन्द के नाम से सारा धार्मिक जगत् परिचित है। स्वामी दयानन्द पहले धार्मिक विद्वान्, नेता, विचारक–चिन्तक, धर्म–प्रवर्तक, देश–भक्त, सारे विश्व के मनुष्यों सहित प्राणिमात्र को प्रेम करने वाले व उनका कल्याण चाहने वाले, सभी लोगों व प्राणियों के दुःखों को दूर करके उन्हें स्थायी रूप से सुखी करने के लिए संघर्षरत अद्वितीय महापुरुष थे। उन्होंने वेद प्रचार का मार्ग मुख्यतः तीन कारणों से चुना था। प्रथम कि उनके समय देश व विश्व में अज्ञान का अन्धकार फैला हुआ था जिसे दूर करे ही सारी कुरीतियां, अन्धविश्वास, निजी व सामाजिक समस्याओं को हल एंव दुःखों को दूर किया जा सकता था। उस अज्ञान व अन्धकार को दूर करने के लिए पर्याप्त ज्ञान व सामर्थ्य उनमें थी। दूसरा कारण यह था कि वह वेदों के पारदर्शी विद्वान या ऋषि–मुनि–मनीषी, एक सिद्धयोगी, सच्चे ईश्वर उपासक, ईश्वर जीव व सृष्टि के ज्ञान से प्रकाशमान संसार के इतिहास तथा दुर्लभ व आलभ्य–विलुप्त तथ्यों से परिचित थे। तीसरा प्रमुख निर्णायक कारण प्रज्ञाचक्षु गुरु विरजानन्द सरस्वती का उनसे इन कार्यों को करने का आग्रह व आज्ञा थी। इसका कारण गुरु विरजानन्द को आर्य व अनार्य ज्ञान के अन्तर का पता था। देश पराधीन था और देशवासी अगणित दुःखों व अपमान का जीवन व्यतीत कर रहे थे। हमारे पौराणिक जन्मना ब्राह्मण बन्धुओं ने वेद एवं वैदिक साहित्य मनुस्मृति, दर्शन व उपनिषद को छोड़कर व भूलकर मूर्ति पूजा, अवतारवाद व फलित ज्योतिष को अपनी आजीविका बना लिया था। अविद्या से ग्रसित उन्होंने बाल–विवाह का समर्थन तथा विधवा विवाह को शास्त्र विरुद्ध घोषित कर दिया था। यत्र–तत्र सती प्रथा भी विद्यमान थी जिसका पोषण किया जाता था। समाज में 58 प्रतिशत से अधिक स्त्री व शूद्रों को अध्ययन का अधिकार नहीं था वेदों का अध्ययन करने की बात तो बहुत दूर थी, वेद के शब्दों को सुन लेने या फिर उच्चारण कर लेने पर कठोर अमानवीय सजा व दण्ड, कान में गर्म रांगा भरने या जिह्वा काट देने का विधान किया गया था। सामाजिक वातावरण में "ढोल, गंवार, शूद्र, पशु, नारी, यह सब ताड़न के अधिकारी' जैसे शब्द सुनाई दिया करते थे। यज्ञ में पशु हिंसा का युग आरम्भ हो गया था। स्वाभाविक लगता है कि यदि पशुओं की बलि दी जाती थी तो पशुओं का मांस भी खाया जाता जाता होगा क्योंकि जिन पशुओं के मांस को भक्तों ने ईश्वर का प्रथ्य भोजन माना था उसे भक्त क्यों न ग्रहण करते? बाल विवाह प्रचलित था जिससे ब्रह्मचर्य के नाश से हमारी युवापीढ़ी विद्या, बल, शक्ति, आरोग्य, पराक्रम व स्वाभिमान से दूर होकर दिशाहीन हो गई थी। इन मुख्य तीन कारणों से महर्षि दयानन्द ने वेद प्रचार के कार्य को अपनाया और इसके लिए आर्य समाज अर्थात् "Society of Noble People" बनाया जिससे संगठित रूप से उनके जीवन व उसके बाद वेदों का प्रचार–प्रसार हो सके और देर या सबेर सारी दुनिया के लोग अपने–अपने असत्य को छोड़कर एक सत्य मत पर स्थिर हो सकें। सत्यार्थ प्रकाश के दसवें समुल्लास में स्वामी दयानन्द ने लिखा है कि मानव जाति का हित तभी होगा जब संसार में एक मत, एक मुख्य भाषा पर सर्वसम्मति, एक सुख–दुख व एक हानि–लाभ अर्थात् सुख, दुख, हानि व लाभ में एक–दूसरे की सहायता व सहयोग एवं सबका एक मत होकर एक जैसा अनुभव करना। यह सत्य मत कुछ भी हो, उन्हें इसकी परवाह नहीं थी। उन्होंने अपने अध्ययन व विवेक से वेद को ईश्वर प्रदत्त ज्ञान व सब सत्य विद्याओं की पुस्तक पाया था जो सृष्टि के आरम्भ में चार आदि ऋषियों को परमेश्वर से मिला था तथा जो अमैथुनी सृष्टि में उत्पन्न हुए थे। स्वामी दयानन्द के जीवन का अध्ययन करने के बाद ऐसा लगता है कि किसी भी प्रकार से यदि वेद सत्य मत के ग्रन्थ सिद्ध न होते तो वह उन्हें भी छोड़ सकते थे और सत्य को अपना लेते, क्योंकि उनका आग्रह सत्य के लिए था, स्वमत का प्रचार नहीं था।

अपने अध्ययन के आधार पर हम यह समझते हैं कि महर्षि दयानन्द के वेद प्रचार को अपने जीवन का मुख्य उद्देश्य व लक्ष्य बनाने के पीछे उनके जीवन में घटी तीन महत्त्वपूर्ण घटनओं का प्रमुख योगदान था। पहली घटना शिवरात्रि के दिन शिवलिंग पर चूहों की स्वतन्त्रतापूर्वक उछल–कूद की थी जिसने शिव की मूर्ति को अचेतन, शक्तिहीन व बलहीन सिद्ध किया था। सत्य के अपूर्व आग्रही दयानन्द ने सदा–सदा के लिए मूर्ति पूजा का तिरस्कार कर दिया। दूसरी घटना उनकी बहिन की आकस्मिक मृत्यु का होना था। उसके कुछ दिनों बाद उनके चाचाजी की भी मृत्यु ने उन्हें इस संसार व हर प्राणी के नाशवान, अनित्य (संसार व मनुष्य शरीर) होने का दिव्य सन्देश दिया। सम्भवतः उन्होंने अनुभव किया कि कुछ दिन बाद उनकी भी मृत्यु होगी। मृत्यु से जुड़े अनेक प्रश्न उनके सामने उपस्थित हुए जिनका समाधान न मिल सका। आज हमें मृत्यु से जुड़े जितने समाधानों का ज्ञान है उसका कारण महर्षि प्रदत्त वेद, वैदिक साहित्य व उनके विवेक से निकले शब्द व ज्ञान है। जब उन्हें मृत्यु से जुड़े प्रश्नों के सही उत्तर नहीं मिले तो उन्हें लगा कि सच्चे शिव तथा मृत्यु के रहस्य को जानना सामान्य जीवन व्यतीत करने से कहीं अधिक आवश्यक है। तब वह अपने भावी जीवन की योजना बनाने में तत्पर हो गये और परिस्थितियों के अनुसार उन्होंने गृह त्याग कर पर परमार्थ का मार्ग पकड़ा। तीसरी घटना, उनका गुरु विरजानन्द के पास पहुंचना और उनसे वेद–व्याकरण व सभी शंकाओं का समाधान करना था। ये तीन घटनायें उनके जीवन में प्रमुख घटनायें थीं जिन्होंने उन्हें वेद प्रचार को अपने जीवन का लक्ष्य बनाने में प्रेरणा प्रदान की। हम यहां शिवरात्रि की घटना पर विचार करना भी आवश्यक समझते हैं।

महर्षि दयानन्द के जीवन में पहला मोड़ शिवरात्रि व्रत की घटना से आया। यद्यपि सहस्रों वर्षों से यह कृत्य होता आ रहा था, परन्तु कभी किसी ने इस प्रकार से शिव लिंग पूजा पर सन्देह नहीं किया था। क्या इसे ईश्वरीय प्रेरणा कहें या महर्षि दयानन्द के पूर्व जन्म का प्रारब्ध। हमें इसमें ईश्वरीय प्रेरणा अधिक दिखाई देती है। प्रारब्ध भी है परन्तु कम इसलिए कि हमारे मन्दिरों के पुजारी महाभारत काल के बाद से, अब 2000 या 2500 वर्ष पूर्व से, इस कृत्य को करते आ रहे थे, परन्तु कभी किसी ने इस प्रकार से शंका की हो और उसके विरोध के लिए अपना सारा जीवन उसके अनुसंधान व सत्यार्थ को जानने में लगाया हो, ऐसा कोई उदाहरण नहीं मिलता। स्वामी शंकराचार्य और उनके समकालीन अनेक प्रवर विद्वानों ने भी मूर्तिपूजा की निस्सारता के बारे में कभी कुछ नहीं कहा और न इसके भावी दुष्परिणामों का ही उन्हें कुछ अन्दाज था। बालक दयाननद ने तो पहली ही बार में मूर्तिपूजा की अयथार्थता, असत्यता व अमौलिकता को जान लिया और उसको छोड़ दिया। हम स्वामी दयानन्द के पिता श्री कर्षनजी तिवारी की भूमिका को भी महत्त्वपूर्ण मानते हैं कि यदि वह कट्टर शिवभक्त न होते और दयानन्दजी से मूर्तिपूजा करने का आदेश न करते तो शायद बालक दयानन्द उस शिखर स्थान पर न पहुंचते, जहां वह पहुंचे। कारण–कार्य सिद्धांत में पूर्व निर्धारित कुछ नहीं होता सब परिस्थितयों व कर्मों पर आधारित हैं हम समझते हैं कि हम जहां महर्षि के ऋणी हैं जिन्होंने स्वामीजी को जन्म ही नहीं दिया अपितु उनके महर्षि बनने की आधारभूत घटना के वह निमित्त भी बने थे। यह विचार बुराइ में भलाई ढूंढने जैसा है। महर्षि दयानन्द ने इस बारे में सत्यार्थ प्रकाश के 11 वें समुल्लास में लिखा है कि 'शिव से भी अमृत के ग्रहण करने के समान पोपलीला के बहकने में से भी आर्यो का जैन आदि मतों से बचा रहना जानों विष में अमृत के समान गुण समझना चाहिए।

हम विचार करते हैं कि किसी कारण से यदि महर्षि दयानन्द वेद व वैदिक विचारधारा का प्रचार न करते तो फिर वह क्या करते? हम अनुभव करते हैं कि फिर वह एक बहुत बड़े योगी होते और योग–जिज्ञासुओं को योग सिखाते होते। महर्षि दयानन्द से भिन्न किसी योगी को वेद प्रचार जैसा कार्य करते हुए नहीं देखा गया। हां हो सकता है कि उनका कोई आश्रम या मठ होता जहां वह निवास करते और कुछ सेठ आदि उनके भक्त हो सकते थे। एक प्रश्न और भी यदा–कदा उठा करता है कि महर्षि दयानन्द ने वेदों का विधिवत् अध्ययन कब किया और वह कब वेदविद् बनें? हम जानते हैं कि गुरु विरजानन्द की कुटिया में आने से पहले वह आर्ष व्याकरण में निष्णात या अभिज्ञ नहीं थे। वहां उन्होंने व्याकरण पढ़ा। उसके बाद गुरु कुटिया को छोड़ने से पूर्व ही उन्होंने गुरु विरजानन्द से ही वेदों का अध्ययन किया होगा, ऐसा प्रतीत होता है। उन्होंने तब जो शंकायें की होगी उनका निराकरण भी गुरुजी ने किया होगा। गुरु दक्षिणा का दिन यह सोचकर ही निर्धारित किया गया होगा कि स्वामी दयानन्द का व्याकरण व वेदों का अध्ययन सम्पन्न व पूर्ण हो गया है। गुरु–दक्षिणा के बाद गुरु कुटिया से निकलकर स्वामीजी आगरा पहुंचे और वहां उपदेश आदि करते रहे तथा अपने कार्य की भावी योजना बनाने में व्यस्त रहे। आगरा या बाद के वर्षों में हम उन्हें वेदों का अध्ययन करते हुए नहीं पाते। सन् 16 नवम्बर, 1869 ई. को काशी के पण्डितों से उन्होंने विश्व का प्रसिद्ध व चर्चित शास्त्रार्थ किया। हम पाते हैं कि उस समय उनकी वेदों पर आस्था व विश्वास चरम पर पहुंच गया था। उससे पूर्व वह निश्चय कर चुके थे कि वेद ईश्वरीय ज्ञान हैं और चारों वेदों के लगभग 20,500 हजार मन्त्रों में कहीं भी मूर्ति–पूजा व प्रतिमा–पूजन का विधान नहीं है। अतः हम समझते हैं कि स्वामी दयानन्द जी ने गुरु विरजानन्द से अष्टाध्यायी–महाभाष्य–निरूक्त आर्ष व्याकरण के साथ–साथ वेदों का अध्ययन भी किया था तथा गुरु विरजानन्द स्वामी दयानन्द के वेद गुरु भी थे जिन्होंने वेदों

शेष पृष्ठ 9 पर ☞

theaaryasamaj.org



# वेदों में वैमानिक विद्या

● ओम् प्रकाश यादव

सामान्यतः यह माना जाता है कि सन् 1903 ईस्वी में आर्विल राइट्स ने यह दिखाया कि वायु से भारी मशीन मानव को लेकर उड़ सकती है। परन्तु इसके आठ वर्ष पूर्व 1895 ई. के प्रारम्भ में प्रसिद्ध संस्कृत के विद्वान पं. शिवकर बापूजी तलपडे ने वैदिक तकनीक पर आधारित एक आधारभूत वायुयान 'मरुत्शक्ति' बनाकर चौपाटी मुम्बई में समुद्रतट पर भारी भीड़ के सामने उड़ा कर दिखाया था। यह विमान चालक रहित था। राइट बन्धुओं की यह विशेषता थी कि उनके विमान को एक चालक ने उड़ाया था। और यह 1200 फुट की दूरी तक उड़ा था तथा ऑर्विल राइट आधुनिक युग में उड़ने वाले प्रथम व्यक्ति हुए। तलपड़े का विमान 1500 फुट की ऊँचाई तक उड़ कर गिर गया था। इतिहासकार इवान कोष्टका ने तलपड़े को वायुयान बनाने वाला प्रथम व्यक्ति बताया है। उनका आविष्कार वेदों के समृद्ध कोष पर आधारित ढाँचे के अनुरूप था। तलपड़े जी अपनी नव-यौवनावस्था अथवा बाल्यकाल से ही वैमानिक शास्त्र की ओर आकृष्ट हुए थे जो कि महर्षि भरद्वाज ने लिखा था। भारतीय शास्त्र के पाश्चात्य विद्वान् स्टीफैन नैप ने सरल शब्दों में यह बताने का प्रयास किया है कि तलपड़े ने क्या किया तथा वे इसमें कैसे सफल हुए। नैप पारद वोर्टेक्स (घूमने वाला) इंजन बनाने को विस्तार से बताता है। यह 'नासा' द्वारा रचित विद्युत् शक्ति से चलने वाले इंजन का अग्रगामी है। नैप आगे लिखते हैं कि पारद इंजनों पर अधिक जानकारी हमें प्राचीन वैदिक ग्रंथ 'समराङ्गण सूत्रधार' में मिल सकती है। इस ग्रंथ में इन मशीनों के शान्ति अथवा युद्ध में प्रयोग पर 230 श्लोक हैं। भारतीय शास्त्र के ज्ञाता विलियम कैलण्डन ने पारद वोर्टेक्स इंजन का विस्तृत वर्णन किया है, 'समराङ्गण सूत्रधार' के अपने अनुवाद में इस प्रकार उद्धृत किया है कि 'वर्तुलाकार वायु के 'फ्रेम' में यह पारद इंजन रखो, वायुयान के मध्य में सौर पारद बॉयलर को रखो। इसमें छिपी गुप्त शक्ति के द्वारा, जो कि गरम किए पारद में है तथा जो कि चक्रवात की गति देता है, वायुयान के मध्य में बैठे हुए व्यक्ति को एक चमत्कारिक ढंग से बहुत दूर तक ले जा सकती है। पारद रखने के एक सुदृढ़ चार बर्तन ढाँचे के अन्दर के भाग में बनाने चाहिएँ। जब ये सौर अथवा दूसरे स्रोत से उत्पन्न अग्नि से गरम किए जाएँ तो विमान 'Thunder power' बनाता है। आज संयुक्त राष्ट्र अमेरिका की विश्व में सर्वाधिक समृद्ध तथा शक्तिशाली एक संस्था है वह एक ऐसा इंजन विकसित करना चाहती है जो कि high velocity electi fied particles का प्रयोग करे न कि गरम गैसों का Blast जो कि आधुनिक युग के जैट इंजनों में किया जाता है।

अन्य लेखक डेविज चाइल्ड्रैस ने अपनी पुस्तक *'प्राचीन भारत तथा ऐटलांटिस का विमान'* में U. F.O. (Unidentifield flying object) से टकराने के कई टकरावों को दर्ज किया है, जिनके बारे में विश्व के कई भागों में आज वर्णन है। वे लिखते हैं कि इन U. F.O वैदिक ग्रंथों में वर्णित वायुयानों से निकट का सादृश्य है। भारतीय विद्वान आचार्य के अनुसार वैमानिक शास्त्र में वायुयान विद्या, जिसमें विमान का खाका शामिल है उन्हें किस प्रकार वाहन तथा दूसरे प्रयोग में लिया जा सकता है इसका विस्तार से वर्णन है। वायुयान विद्या का ज्ञान संस्कृत में 100 भाग, आठ अध्याय, 500 सिद्धान्त तथा 3000 श्लोकों में है जिनमें एक विमान उड़ाने की 32 तकनीक शामिल हैं। वास्तव में काल अथवा युग के वर्गीकरण में आधुनिक कलियुग में वायुयानों को 'कृथकविमान' कहा गया है। ये सौर ऊर्जा की शक्ति से चलने वाले इंजनों से उड़ाए जाते हैं। इसका भय है भरद्वाज मुनि के वैमानिक शास्त्र का आज केवल एक भाग ही बचा है।

तलपड़े ने इस विषय में कई प्राचीन पुस्तकों का अध्ययन किया था। यह प्रसन्नता की बात है कि भारत में वैज्ञानिकों के बड़े सहायक वडोदरा के महाराज सयाजी राव गायकवाड तलपड़े की सहायता से विमान बनाने के कार्य में जुट गए। एक दिन सन् 1895 में (दुर्भाग्य-वश पुणे के पत्र में, जिसने इस घटना का वर्णन किया है, वास्तविक तारीख नहीं लिखी।) बहुत बड़े जिज्ञासु विद्वान के सामने जिनमें प्रमुख रूप से भारत के प्रसिद्ध न्यायाधीश तथा राष्ट्रप्रेमी महादेव गोविन्द रानाडे तथा महाराज सयाजीराव गायकवाड थे, तलपड़े ने अपने चालक रहित विमान मरुत्शक्ति को 1500 फुट की ऊँचाई तक उडते तथा फिर पृथ्वी पर गिरते देखा। पर एक भारतीय वैज्ञानिक की यह उपलब्धि ब्रिटिश शासकों को रास नहीं आई। अच्छी नहीं लगी। ब्रिटिश सरकार की चेतावनी के बाद महाराज सयाजी राव ने तलपडे की सहायता करना बन्द कर दिया। यह कहा जाता है कि मरुत्शक्ति के अवशेष तलपड़े के रिश्तेदारों ने विदेशियों को बेच दिए। यह कितना दुर्भाग्यपूर्ण कृत्य था। तलपड़े का 1916 में देहान्त हो गया। उन्हें अपने ही देश में सम्मान नहीं मिला। 14 दिसम्बर 2003 में गोवा के प्रमुख अंग्रेजी दैनिक *'नवहिन्द टाइम्स'* में प्रकाशित का आर. एन.स्वामी के लेख *'राइट ब्रदर्स'* पहले एक भारतीय ने वायुयान का आविष्कार किया'' पर आधारित है।

भारत में विमान का सबसे पहला वर्णन आज वाल्मीकि रामायण में उपलब्ध है जो कि लगभग 16 लाख वर्ष पहले लिखी गई थी। यह कुबेर के पुष्पक विमान के विषय में है। यह ध्वनि के आदेशानुसार उड़ता था।

परन्तु अंग्रेज एक गुलाम देश को अच्छी रोशनी में नहीं दिखाना चाहते थे इसलिए रामायण, जो कि तथ्यों पर आधारित है, को उन्होंने गल्प बताया।

हमें वेदों में वायुयान, नौका, जहाज तथा सौर विद्युत शक्ति से चलने वाले रथ का वर्णन मिलता है। ऋग्वेद के अध्याय 1 व 8, वर्ग 8 मंडल 3 व 4 में यह लिखा है। यहाँ पर जल,थल तथा अन्तरिक्ष में तेज गति से चलनेवाली यान विद्या लिखी है। कोई भी व्यक्ति जो स्वर्ण, रजत, ताम्र, पीतल, लौह तथा काष्ठ, से अग्नि, जल तथा, वायु के प्रयोग से अनोखी नौकाएँ बनाता है तथा उनका समुद्र तथा नदियों में यात्रा में प्रयोग करता है वह सम्पत्ति से समृद्ध होता है। 'अश्वि' नाम से प्रसिद्ध तथा इनका प्रयोग वेदों में वर्णित विधि से वाहनों को तेज गति से चलने वाला बनाता है। 'अश्वि' की सहायता से तथा इसकी गति से हम जल,थल, तथा वायु पर आराम से जा सकते हैं तथा पृथ्वी की परिक्रमा तीन दिन-रात में कर सकते हैं।

ऋग्वेद के अध्याय 1,8 व 9 तथा मन्त्र 5, 12 में यह लिखा है कि ये वाहन अश्वि की सहायता से चल सकते हैं। ये वायु में विमान की सहायता से उड़ सकते हैं। वाहन में तीन पहिए होने चाहिएँ। इसके हिस्से वज्र के समान कठोर तथा इसकी मशीन मजबूत होनी चाहिए। इसमें तीन खम्भे होने चाहिएँ जो कि काष्ठ अथवा लौह से जुड़े होने चाहिएँ। सब मशीन इसमें जुड़ी होनी चाहिए।

ऋग्वेद के अध्याय 6 व 9 मं. 7 में यह लिखा है कि वायुयान स्वर्ण, रजत तथा ताम्र इन धातुओं से बने होते हैं। हम इन वाहनों की सहायता से कठिन मार्गों तथा जगहों पर जा सकते हैं। वाष्प के लिए इन वाहनों में पानी के भंडार गृह बनाने चाहिएँ। हे मानव इन वाहनों को मन की गति से चलने वाला बनाओ। ऋग्वेद के अष्टक 1, 1,3 व 34, मं. 7 तथा अष्टक 2, 93 व 23 मं. 47, 48 में आगे यह लिखा है कि हम सबको मिलकर ऐसे वाहन बनाने चाहिएँ कि जिनसे हम विभिन्न देशों में जा सकें। इन वाहनों के विभिन्न हिस्सों को जोड़ने के लिए 300 कीलें होनी चाहिएँ जिन्हें निकाल कर सब हिस्से अलग हो जाएँ। जब यान को उड़ाना हो तो वाष्पघर का ढक्कन बन्द कर देना चाहिए तथा नीचे लाने के लिए इसे खोल देना चाहिए।

वेदों में अनेक मंत्र इस विषय पर हैं पर विस्तार भय से केवल कुछ ही मंत्र उद्धृ किए गए हैं।

विजय कुंज
165 पी.डी.ए. कालोनी
आल्त परवरी-403521 (गोआ)
मो. 09423885322

☞ पृष्ठ 06 का शेष

# अथर्ववेद का राहू-केतु..

ग्रहण कहीं दिखाई देगा और कहीं नहीं। जमदग्नि को ब्रह्मा ने बताया कि तुम्हारी मृत्यु कार्त्तवीर्यार्जुन से होगी, तुम्हारा पुत्र 21 बार पृथ्वी को क्षत्रियविहीन करेगा।

''ब्रह्मवैवर्त पुराण'' की इस कथा में नवीनता यह है कि यहाँ अमृत पीते समय राहु की शिकायत विष्णु से करने की घटना को लेकर राहु और सूर्य मे वैर-भाव का उल्लेख नहीं होकर उसका कारण जमदग्नि का शाप बताया गया है। यह काल्पनिक आख्यान विचित्र अतिरंजना से भरपूर है।

'पद्मपुराण' में आता है कि समुद्रमन्थन के बाद राहु को छल से अमृतपान करते हुए देख सूर्यचन्द्र ने इनकी विष्णु को शिकायत की। विष्णु ने राहु का सिर काट डाला। इसके सिर से केतु की उत्पत्ति हुई एवं राहु सिरविहीन अवस्था में विचरण करने लगा। विष्णु के डर से ये दोनों वहाँ से तो भाग खड़े हुए, किन्तु सूर्य-चन्द्र के प्रति इनका प्रतिशोध भाव बना रहा। इसी कारण आज भी ये उनको ग्रसते हैं, जिसे सूर्यग्रहण और चन्द्रग्रहण के नाम से व्यवहृत किया जाता है। पद्मपुराण में राहु का व्यक्ति के रूप में कई स्थलों पर उल्लेख हुआ है। वह जलंधर राक्षस का दूत बनकर शंकर के पास गया। ब्रह्मा की सभा में भी यह बैठा रहता है। इसकी पुत्री सुप्रभा या प्रभा है। 'मत्स्यपुराण' में भी उक्त कथा वर्णित है। इसी कारण समुद्र मन्थन की घटना जिन पुराणों में वर्णित हुई है, प्रायः सर्वत्र इनकी पारस्परिक शत्रुता का उल्लेख आ

शेष पृष्ठ 11 पर ☞

thearyasamaj.org



# जगन्नाथ ने महर्षि दयानन्द को दूध में विष दिया–एक झूठी कहानी

● कृष्ण चन्द्र गर्ग

बाबू देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय द्वारा लिखित 'महर्षि' दयानन्द जीवन–चरित में लिखा है–27 सितम्बर 1883 को स्वामी जी को प्रतिश्याय (जुकाम)हो गया था, 28 को भी शरीर ठीक न हुआ। 29 सितम्बर की रात्रि को यथानियम उन्होंने दुग्ध पिया जिसे धौड़ मिश्र नाम के रसोइये ने पिलाया। यह रसोइया शाहपुरा से ही स्वामी जी के साथ आया था।

पण्डित लेखराम द्वारा संकलित महर्षि जीवनचरित्र में लिखा है–27 सितम्बर 1883 गुरुवार को स्वामी जी को कुछ क्लेश प्रतिश्याय (जुकाम) हुआ। 29 सितम्बर को धोड मिश्र रसोइये से (जो शाहपुर का रहने वाला था) दूध पीकर वे सोए।

'दयानन्द दिग्विजयार्क' में श्री गोपाल राव हरि लिखते हैं कि महर्षि दयानन्द उस रात्रि धूड़ मिश्र नाम के पाकाध्यक्ष से जो कि शाहपुरे का रहने वाला था, दूध पीकर सोये थे।

उपरोक्त तीनों जीवन चरित्रों में जगन्नाथ नाम के किसी रसोइये का जिक्र नहीं है। महर्षि दयानन्द के ये तीनों जीवन चरित्र प्रामाणिक माने जाते हैं। 'दयानन्द दिग्विजयार्क' का अधिकतर भाग तो महर्षि के जीवन काल में ही लिखा गया था।

जगन्नाथ का जिक्र–स्वामी सत्यानन्द सरस्वती द्वारा लिखित महर्षि के जीवन–चरित्र 'श्रीमद्दयानन्दप्रकाश' में लिखा है–राजकोट से एक महाशय ने सद्धर्म–प्रचारक समाचार पत्र को जो सूचना दी थी उसके आधार पर उस पत्र में छपा था कि एक जग्न्नाथ नाम का ब्राह्मण–वंशीय मनुष्य स्वामी जी के पास चिरकाल से रहता था।.... वह पाकशाला के पाचन क्रिया भी किया करता था।... वह गुरुद्रोह और ब्रह्महत्या का अपराधी बन गया।.... स्वामी जी ने उसे पकड़ लिया और जगन्नाथ ने अपने अपराध को मान भी लिया। फिर स्वामी जी ने कहा ''जगन्नाथ, लो ये कुछ रुपये हैं मैं आपको देता हूँ। आपके काम आएँगे। परन्तु जैसे भी हो राठौर–राज्य की सीमा से पार हो जाओ। नेपाल राज्य में जा छिपने से ही आपके प्राणों का परित्राण हो सकता है।''

जगन्नाथ सम्बन्धी इस कहानी का कोई विश्वसनीय आधार नहीं है। यह स्पष्ट तौर पर मन गढ़ंत और झूठी है। आश्चर्य की बात तो यह है कि आर्य समाज के कई लेखक और प्रवक्ता स्वामी जी द्वारा जगन्नाथ को पाँच सौ रुपये तक देने की बात करते हैं। यह भी बिना सिर–पैर की बात है। उस समय का पाँच सौ रुपया आज के कम से कम पचास हजार रुपये के बराबर तो होगा ही। महर्षि अनर्थ कभी नहीं कर सकते थे। लोग स्वामी जी को धन वेद प्रचार के लिए देते थे। ऐसे धन का दुरुपयोग करना तो दूर स्वामी जी तो बहुत मितव्ययी थे। ऐसा लिख या बोल करके आर्य समाज के लेखक और प्रवक्ता स्वामी जी को बड़ा दयालु सिद्ध करना चाहते हैं। मैं समझता हूँ कि वे स्वामी जी पर धन के अपव्यय का आरोप लगा रहे हैं और उनका अपमान कर रहे हैं। स्वामी जी दयालुता और महानता तो उनके समाज, राष्ट्र और मानवता के उत्थान के लिए कामों से स्पष्ट झलकती है, जिसकी छाप संसार के बुद्धिजीवियों पर सदा अमिट रहेगी।

831 सैक्टर 10
पंचकूला, हरियाणा
0172–4010679

☞ पृष्ठ 07 का शेष

# स्वामी दयानन्द ने वेद...

के विषय में अनेक रहस्य उन्हें बताये थे। हमें यह भी लगता है कि हर योगाभ्यासी को समय–समय पर कुछ विशेष ज्ञान व अनुभूतियां होती रहती है। वह उन्हें केवल पत्र या अपने अन्तरंग मित्रों व किसी विशेष अंतरंग शिष्य को बताता है। वह सब स्वामी विरजानन्द ने स्वामी दयानन्द को बताई थी।

स्वामी दयानन्द ने अपने जीवन का जो उद्देश्य, मार्ग व लक्ष्य चुना, हमें लगता है कि वह यजुर्वेद के 40वें अध्याय के ''विद्यां व अविद्यां च यस्तद्वेदोभयं सह। अविद्याय मृत्युं तीर्त्वा विद्ययामृतमश्नुते।।'' मन्त्र के पूरी तरह अनुकूल है। महर्षि ने सत्यार्थ प्रकाश के नवम् समुल्लास में इसका अर्थ करते हुए कहा है कि जो मनुष्य विद्या और अविद्या के स्वरूप को साथ ही साथ जानता है वह अविद्या अर्थात् कर्मोपासना से मृत्यु को तर के विद्या अर्थात् यथार्थ ज्ञान से मोक्ष को प्राप्त होता है। इसी सन्दर्भ में महर्षि ने लिखा है कि कर्म और उपासना अविद्या इसलिये है कि यह बाह्य और अन्तर क्रियाविशेष नाम है, ज्ञानविशेष नहीं। इसी से मन्त्र में कहा है कि बिना शुद्ध कर्म और परमेश्वर की उपासना के मृत्यु–दुःख के पार कोई नहीं होता अर्थात् पवित्र कर्म पवित्रोपासना और पवित्र ज्ञान ही से मुक्ति और अपवित्र–मिथ्याभाषणादि कर्म पाषाणमूत्यादि की उपासना और मिथ्याज्ञान से बन्ध होता है। हमें प्रतीत होता है कि स्वामी दयानन्द का वेद प्रचार 'अविद्या' अर्थात् पवित्र कर्म उपासना होने के कारण चुना और ऐसा करके उन्होंने जीवन के अभीष्ट ''मोक्ष'' को प्राप्त करने का प्रयास किया जिसमें यह सफल हुए ऐसा अनुमान होता है। उन्हें अपनी बहिन व चाचा की मृत्यु से जो भय हुआ था और मृत्यु से बचने, तरने व पार होने का जो उपाय वह ढूंढ रहे थे वह उन्हें 'अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययामृतमश्नुते' के अर्थ मिला था।

महर्षि दयानन्द ने अपना सारा जीवन सत्य के अनुसंधान में लगाया था। वह एक सिद्ध योगी थे। उन्हें वेदों का जो ज्ञान प्राप्त हुआ वह विगत 5,000 वर्षों में हमारे देश के किसी विद्वान को नहीं हुआ था। यदि वह वेद प्रचार के कार्य को न अपनाते तो हमारा देश रसातल को चला जा सकता था। उन्होंने जो मार्ग चुना, वह अक्षरशः व सम्पूर्णता में पूर्णरूपेण सही था। वह दैवी या ईश्वरीय विधान था या नहीं? यह तो ईश्वर ही जानते हैं उनके इस निर्णय से भारतीय समाज व संसार लाभान्वित हुआ। संसार में आज योग व वेदों का जितना तर्क–पूर्ण ज्ञान है तथा जिसके कारण आज भारत पुनः विश्वगुरु के पद पर प्रतिष्ठित है, उसका पूर्ण श्रेय महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज को है। हम तो यहां तक कहेंगे कि एक न एक दिन सारे संसार को वेदों की शरण में आना होगा। यह कार्य सम्पन्न हो सकता है यदि आर्य समाज का संगठन इसके लिए कमर कस ले और वेद प्रचार को अपनी पूरी शक्ति, बल व ऊर्जा से करे तो सम्भव है कि विश्व में कहीं कोई रोमां रोलां जैसे ऋषि के भक्त उत्पन्न हो जायें और फिर सर्वत्र वेदों के सिद्धांतों व मान्यताओं के पालन के युग का सूत्रपात हो। हम यहां यह भी कहना चाहेंगे कि मनुष्य कई बार कुछ अच्छा कार्य करता है तो उसमें उसे जो सफलता मिलती है वह कल्पनातीत होती है जिसका उसे पूर्व में अनुमान ही नही होता यदि संगठित रूप से पूरी तैयारी के साथ हम वेद प्रचार का कार्य करेंगे तो हो सकता है कि ईश्वर की कृपा से उसमें कल्पनातीत सफलता मिले और हम आगे बढ़ें व लक्ष्य के निकट पहुंचें।

आइये, लेख को विराम देने से पूर्व सत्यार्थ प्रकाश से स्वामी जी के कुछ दिव्य प्रेरणाप्रद वाक्यों पर दृष्टि डालते हैं–जब तक इस मनुष्य जाति में परस्पर मिथ्यामतमतान्तर का विरु)वाद न छूटेगा तब तक अन्योन्य को आनन्द न होगा। यदि हम सब मनुष्य और विशेष विद्वज्जन ईर्ष्या–द्वेष छोड़ सत्यासत्य का निर्णय करके सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करना–कराना चाहें तो हमारे लिए यह बात असाध्य नहीं है। ...यदि ये लोग अपने प्रयोजन में फंसकर सबके प्रयोजन को सि) करना चाहें तो अभी ऐक्यमत हो जायें।' (एकादशः समुल्लास) 'जब तक एक मत, एक हानि–लाभ, एक सुख–दुख परस्पर न मानें तब तक उन्नति होना बहुत कठिन है।' (दशमः समुल्लास)। '...परन्तु भिन्न–भिन्न भाषा, पृथक–पृथक् शिक्षा, अलग व्यवहार का विरोध छूटना अति दुष्कर है। विना इसके छूटे परस्पर का पूरा उपकार और अभिप्राय सिद्ध होना कठिन है। इसलिए जो कुछ वेदादि शास्त्रों में व्यवस्था व इतिहास लिखे हैं उसी का मान्य करना भद्रपुरुषों का काम है।' (अष्टमः समुल्लास)। 'परमात्मा सबके मन में सत्य मत का ऐसा अंकुर डाले कि जिससे मिथ्या मत शीघ्र ही प्रलय को प्राप्त हों। इसमें सब विद्वान लोग विचार कर विरोधाभास छोड़ के (अविरुद्ध मत के स्वीकार से सब जने मिलकर सबके) आनन्द को बढ़ावे।' (दशमः समुल्लास)।

क्या महर्षि दयानन्द अपने मिशन में सफल हुए? हमारा विचार है कि महर्षि दयानन्द ने वेदों पर आधारित सि)तों, मान्यताओं व विचारों का प्रचार किया। वह प्रत्येक व्यक्ति, विद्वान् व संस्थाओं के अग्रणीय पुरुषों से मौखिक वार्ता, शंका समाधान, शास्त्रार्थ करने में तत्पर रहे और उनमें सफल रहे। उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, आर्याभिविनय, संस्कार विधि, वेदभाष्य आदि का प्रणयन किया जो विश्व साहित्य की अमूल्य निधि है। उनके शिष्य भी अहर्निश वेदों व उनकी विचारधारा के समर्थन में उपयोगी एंव महत्त्वपूर्ण साहित्य के निर्माण के कार्य में लगे हुए हैं। हम समझते हैं कि ऋषि अपने मिशन में पूर्ण सफल रहे। सभी लोगों ने अपने प्रयोजनों, हित–अहित, अज्ञान, स्वार्थ आदि के कारण उनके विचारों को स्वीकार नहीं किया। कुछ भी हो असत्य अधिक समय तक ठहर नहीं सकता और सत्य तिरोहित नहीं किया जा सकता। अन्तोगत्वा, सभी को सत्य को स्वीकार करना ही होगा। सत्य को ग्रहण करना और असत्य को छोड़ना ही मानव धर्म है। हम अतीव भाग्यशाली हैं कि हमें वैदिक धर्म को अपनाने, उसे समझने उस पर चलने व उसका प्रचार करने का कुछ अवसर मिला जिसका श्रेय महर्षि दयानन्द को है। उनकी स्मृति को सादर प्रणाम एवं श्रद्धांजलि।

196, चक्खूवाला–2
देहरादून – 248001

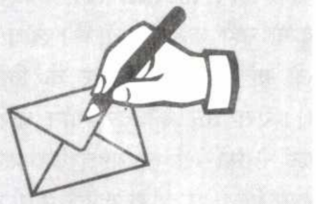

# पत्र/कविता

## जरूरत है गुरुकुलों का पाठ्यक्रम बदला जाय

आर्य जगत् में प्रकाशित श्री आर्य मित्र जी के विचारों से में पूर्णतया सहमत हूँ जो कि उनके पत्र– ''विशेष ध्यान दें'' में प्रस्तुत किए गये हैं। अगर माता पिता जीवित हैं तो उनके आशीर्वाद के बिना कोई भी संस्कार परिपूर्ण नहीं, विवाह की तो बात ही छोरें। सभी आर्य समाज इस बात को समझें। महर्षि दयानन्द का यह कहना कि। विवाह के मामले में लड़के व लड़की की एक दूसरे के लिये पंसन्द व रज़ामन्दी ज़रूरी हैं का अर्थ यह न निकाला जाये कि उन्होंने माता पिता व अन्य बुज़ुर्गों इन्हें आशीर्वाद के बिना विवाह का License दिया। आज के गुरुकुलों से निकले अधिक विद्यार्थी इसी काम में लगे हैं। मेरी एक दो से बात हुई तो उन्होंने दोष पढ़ाई के पाठ्यक्रम को दिया और कहा ''हम यह न करें तो और क्या करें। जो हमें पढ़ाया है उस से कुछ और करने के योग्य नहीं संस्कृत व हिन्दी के अध्यापकों के इतन पदे नहीं की हम सब लग जायें''

जरुरत है गुरुकुलों के पाठ्यक्रम को बदला जाये व इन्हें आचार्यो के कब्जे से निकालकर अच्छे शिक्षाविदों को मुखिया बनाया जाये।

भारतेन्दु सूद
231/सैक्टर 45–I
चण्डीगढ़ – 160047

**********

## उद्देश्य यही है, मानव जीवन का भाई

**पुरमेकादशम् द्वारमजस्यावक्र चेतसाः।**
**अनुष्ठाय न शोचति विमुक्तश्य विमुच्यते।।**
(कठोषनिषद् 2/2/9)

चकाचौंध में भौतिक जग की, विषय भोग की लोलुपता,
में जीवन हर एक व्यक्ति का है अशान्त,उलझां–उलझा।।
क्या निर्धन, क्या धनी दुखी हैं, सभी यहाँ गमगीन हुऐ।
राग–द्वेष से ग्रसित, मोह –माया,तम के अधीन हुऐ।।

जब तक शुद्ध ज्ञान की उपलब्धि न उन्हें हो पाऐगी।
यूँहि भ्रान्तियों में भटकेंगे, शान्ति नहीं मिल पाऐगी।।
कठोपनिषद् एक उदाहरण दे, इसको समझाती है।
तम अज्ञान दूर कर जीवन का उद्देश्य बताती है।।

यह शरीर इक नगर–किलेवत् है इसमें ग्यारह द्वारे।
हैं, आने–जाने को, पहरा देते जिनमें रखवारे।।
कोई अनधिकृत कभी न इनसे आना–जाना कर सकता।
नगर नृपति इसमें निर्भय, निर्द्वन्द्व आनंद रह सकता।।

आँख, कान, अरु नाकरन्ध्र दो–दो, मल, मूत्र, नाभि, मुख के।
एक–एक दरवाजे मिलकर, दस द्वारे हैं जो दिखते।।
ब्रह्मरन्ध इक गुप्त द्वार है, जो अन्तिम क्षण ही खुलता।
नगर–नृपति जब महाराजा से मिलने की जत्रा करता।।

जो व्यक्ति इन इन्द्रिय रूपी–तन के –दश ही द्वारों पर।
पूर्ण नियन्त्रण रख, करता निष्काम कर्म निर्भय होकर।।
वह नहि फसता काम, क्रोध, मद मोहादि के बंधन में।
अद्य करता कर्त्तव्य कर्म, आसक्ति रहित होकर मन में ।।

वह तन त्याग अन्त में , होकर गुप्त द्वार से है जाता।
प्राप्त परम पद–सयुज सखा संग–करता, मोक्षानन्द पाता।।
यही ध्येय–उद्देश्य यही है, मानव जीवन का भाई।
इसे प्राप्त कर सार्थ करो, जो तुमने मनुज योनि पाई।।

**दयाशंकर गोयल**
**1554 डी. सुदामा नगर इंदौर**
**पिन – 452009 (म.प्र.)**

## ऐसे हो सकता है आर्य समाज का भविष्य उज्ज्वल

- आर्य समाज के सदस्यों को अपनी आय का शतांश अथवा एक हजार रुपये वार्षिक चन्दा अवश्य देना चाहिये ताकि इस मंहगाई के युग में यज्ञ और उपदेश इत्यादि का कार्य क्रम ठीक तरह से चलाया जा सके।
- आर्य समाज को त्यागी तपस्वी उपदेशकों की आवश्यकता है जो दक्षिणा का लालच न करे। जिन उपदेशकों को कहीं से पैनशन मिलती हो अथवा आय का अन्य साधन हो वह उचित मात्रा में मार्ग व्यय ही लिया करें।
- आर्य समाज में पुरोहित का प्रबन्ध हो तो वही सरसंग का कार्यक्रम पूरा करे, बाहर से उपदेशक न बुलाया जाये। आर्य समाज में प्रतिदिन सन्ध्या सत्संग का कार्यक्रम अथवा छोटा हवन एक समय किया जा सकता है। अगर कोई सदस्य यह कार्य क्रम चला सकता है तो उसे ही प्रोत्साहित किया जाये।
- आर्य समाज को जन आन्दोलन बनाया जाये और महीने में एक बार आर्य समाज से बाहर निकल कर किसी कालोनी अथवा पार्क में वेद प्रचार करें जिससे आम जनता के लोग आर्य समाज के के सम्पर्क में आयें।
- महर्षि दयानन्द ने कहा था है कि आर्य समाज कोई नया मत अथवा पंथ नही है, हमारा धर्म तो सत्य सनातन वैदिक धर्म है इसलिये हम सब जगह वैदिक धर्म ही लिखें लिखायें तभी हमारे परिवार भी वैदिक धर्म बनेंगे।
- आर्य समाज वेद को ईश्वरीय ज्ञान मानता है वेद में ईश्वर को निराकार ही बताया गया है और यह स्पष्ट कहा है **किन तस्य प्रतिमा ऽस्ति यस्य नाम महद्यशः** इसलिये ऐसा उपदेश करने में डरना नहीं चाहिये। इसमें किसी के नाराज होने की बात नहीं है
- आर्य समाज के लोग अपने घरों में पुरोहित से शुभ अवसरों पर हवन इत्यादि अवश्य करायें, अर्थात् अपने अथवा परिवार के सदस्य का जब जन्म दिवस हो, ताकि पुरोहित को आर्थिक सहायता मिल सके।
- आर्य समाज को अपने मन्दिरों में गरीब युवक युवतियां के विवाहों का भी आयोजन करना चाहिये
- आर्य समाजों को शुभ अवसरों अथवा अपने वार्षिक उत्सव में ऋषि लगंर का प्रबन्ध अवश्य करना चाहिये जिसमें कोई भी व्यक्ति आकर भोजन कर सकता है क्योंकि अन्न का दान सबसे बड़ा दान होता है।
- आर्य समाज की प्रतिनिधि सभाओं को समाज सुधार तथा देश उद्धार के लिये भी अन्दोलन का कार्य कर्म बनाना चाहिये इससे ही आर्य समाज की उन्नति होगी और आज जनता आर्य समाज से जुड़ेगी।
- आर्य समाजों के सदस्य आपस में प्रेम पूर्वक व्यवहार करें क्योकि सब भाई हैं। पदों का लालच तथा झगडे न करें। क्योंकि झगड़े करने से जनता में हमारी छवि धूमिल होती है।
- आर्य समाज की प्रतिनिधि सभायें वेद प्रचार की योजना बनायें और आर्य समाजों का निरीक्षण भी कराया करें ताकि यह पता चले कि उनके अधीन सब आर्य समाजों में नियम पूर्वक सत्संग और अन्य उत्सव मनाये जाते हैं।
- युवक युवतियां को आर्य समाज से जोड़ने के लिए आर्य प्रतिनिधि सभायें विशेष भाषणों का आयोजन किसी बड़ी आर्य समाज में करें जिससे उनका पश्चिमी सभ्यता के प्रभाव से बचाया जा सके।
- आर्य समाजों मन्दिरों में योग शिविर भी लगाये जायें क्योंकि पातंजलि मुनि द्वारा आदिष्ट अष्टांग योग अत्यन्त लाभकारी है। यम, नियम, आसन, प्राणायायम शरीर को स्वस्थ रखने तथा प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि ईश्वर प्राप्ति के साधन हैं। ईश्वर का साक्षात्कार केवल योग ध्यान से ही सम्भव है।

**अश्विनी कुमार पाठक सी 233**
**नानक पुरा नई दिल्ली –21**
**फोन. 26871636**

**********

thearyasamaj.org

thearyasamaj.org



# डी.ए.वी. सैक्टर-49 फरीदाबाद में हुआ चरित्र निर्माण दिवस का आयोजन

आर्य युवा समाज के तत्वाधान में डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल सैक्टर-49 फरीदाबाद में त्यागमूर्ति शिक्षाविद महात्मा हंसराज के 150 वे जन्म दिवस को चरित्र निर्माण दिवस के रूप में मनाया गया है। प्रातः विद्यालय में यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें अभिभावकों को भी आमंत्रित किया गया था। कार्यक्रम की अध्यक्षता फरीदाबाद के प्रसिद्ध आर्य नेता डॉ. सत्यदेव जी ने की। कार्यक्रम का प्रारम्भ ईश प्रार्थना के साथ हुआ। विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री बिमल दास जी ने सभी गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत किया। मुख्यवक्ता के रूप में बोलते हुए आर्य समाज की प्रसिद्ध विदुषी सविता आर्या एवं भनोपदेशक श्री बच्चू सिंह जी को आमंत्रित किया गया था। छात्रों को संबोधित करते हुए कहा कि ''जीवन में शिक्षा के साथ-साथ चारित्रिक विकास बहुत आवश्यक है और इसके लिए छात्र जीवन में ही ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए अपने लक्ष्य को प्राप्त करने का प्रयत्न करना चाहिए, साथ ही माता पिता और अध्यापकों का भी हमेशा सम्मान करना चाहिए, क्योंकि बड़ों का आदर करने से आयु, विद्या, यश और बल इन चार चीजों की प्राप्ति होती है और ये गुण ही व्यक्ति को उसके लक्ष्य तक पहुचा सकते हैं। श्री बच्चू सिंह जी ने अपने भजनों के माध्यम से सभी को मोहित किया। अध्यक्षीय भाषण देते हुए डॉ. सत्यदेव जी ने महात्मा हंसराज जी के जीवन पर प्रकाश डाला छात्रों को उनके जीवन से त्याग, प्रेम और कर्मठता आदि गुणों को जीवन में अपनाकर उन्नति के पथ पर आगे बढ़ने की प्रेरणा। अंत में विद्यालय के प्रधानाचार्य ने सभी आगंतुकों का धन्यवाद करते हुए सभी को आश्वासन दिया कि महात्मा हंसराज जी के कथनानुसार छात्रों के चारित्रिक विकास पर अधिक ध्यान देते हुए इस तरह के कार्यक्रम आगे भी आयोजित करते रहेगें। शान्ति पाठ के साथ कार्यक्रम का समापन किया गया।

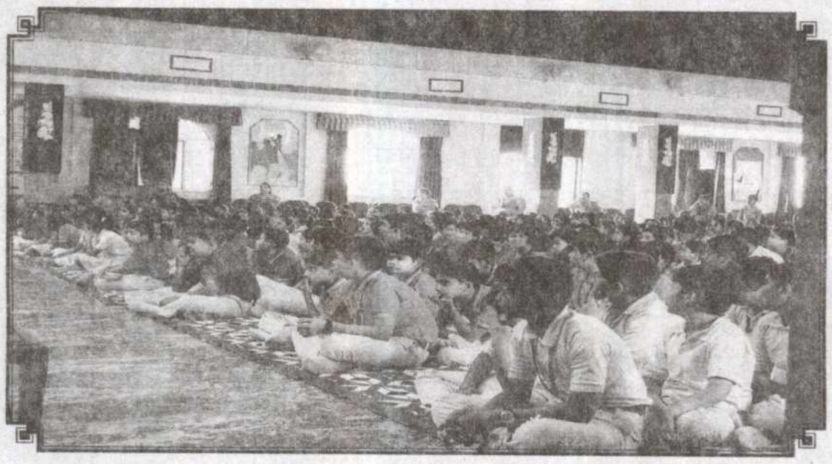

# सभी समस्याओं का समाधान है वेदों में!

वेदों में वर्तमान युग में व्याप्त सभी समस्याओं का समाधान विद्यमान है। परमपिता परमेश्वर ने मनुष्य के लिए उपयोगी समस्त ज्ञान वेदों में प्रदान किया है।'' यह बात आर्यसमाज विज्ञाननगर के सभागार में आयोजित वैदिक सत्संग में मुख्य अतिथि डॉ. अशोक कुमार आर्य अमरोहा ने कहीं। उन्होंने कहा कि परिवार तथा समाज में समन्वय, विश्व शांति एवं विश्व बंधुत्व जैसे विषयों पर जो गंभीर चिंतन वेदों में उपलब्ध है वह अन्यत्र नहीं है। भौतिक परितापों से निवृत्ति, प्रदूषण मुक्त पृथ्वी वैदिक चिंतन की परम्परा का ही प्रतिफल है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए आर्य समाज जिला सभा के प्रधान अर्जुनदेव चढ़डा ने कहा कि ''आर्य समाज सेवा कर संसार के उपकार का संदेश देता है। समाज में व्याप्त भ्रान्तियों का निवारण कर सकारात्मक सोच केवल आर्य समाज ही दे सकता है।''

विशिष्ट अतिथि अरविन्द पाण्डेय, प्रधान, महर्षि दयानन्द वेद प्रचार समिति, कोटा ने कहा कि स्वाध्याय से कुटिल भावनाएं दूर होती है और श्रेष्ठ विचारों का संचार होता है।

आर्य समाज के मंत्री राकेश चड्ढा ने बताया कि कार्यक्रम का प्रारंभ यज्ञ से हुआ। यज्ञ के उपरान्त आयोजित सत्संग में अमरोहा से पधारी माता श्रीमती शकुन्तला आर्या ने ईशवंदना का भजन प्रस्तुत किया।

आर्य समाज विज्ञाननगर के प्रधान श्री जे.एस.दुबे ने सभी आभार व्यक्त किया।

☞ पृष्ठ 08 का शेष

# अथर्ववेद का राहू-केतु...

ही जाता है। ब्रह्माण्ड, वायु, विष्णु पुराणों में यह सन्दर्भ आया है।

भर्तृहरिशतक 2/34 में भी राहु-केतु द्वारा चन्द्र-सूर्य को सताये जाने को कथन है। याज्ञ. स्मृति और मनुस्मृति में इनके ग्रहण समय हो ''राहुसूतक'' कहकर अशुभ माना है। मुद्राराक्षस में केतु द्वारा चन्द्रमण्डल को ग्रसने का वर्णन है।

**स्वरूपविवेचन एवं निष्कर्ष**

चन्द्र-सूर्य और राहु-केतु सम्बन्धी आख्यान का कितना ही मानवीकृत रूप हमें भारतीय साहित्य में दिखाई देता हो, किन्तु उसका प्राकृतिक स्वरूप लुप्त नहीं हुआ है। इन नामों के ग्रहों के कारण वह अन्ततः अपने प्राकृतिक स्वरूप का संकेत दे जाता है।

यह आख्यान इस बात का ज्वलन्त प्रमाण है कि वेदों में प्राकृतिक पदार्थों-दृश्यों या ब्रह्मांडयी विद्याओं के वर्णन के साथ-साथ व्यावहारिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक शिक्षाएँ आलंकारिक शैली में दी गयी हैं। ऐसा ही अन्य आख्यानों में समझना चाहिए।

यहाँ राहु-केतु प्राकृतिक ग्रह होते हुए भी आसुरी प्रवृत्तियों के प्रतीक हैं, जो दैवी शक्तियों के प्रति ईर्ष्या, द्वेष एवं वैमनस्य की भावना रखकर उन्हें हानि पहुँचाने का प्रयास रखते हैं। सूर्य और चन्द्र देव हैं। स्वच्छ, उज्ज्वल स्वरूप है और प्रकाश, जीवन एवं नैरोग्य प्रदान कर आकाशमंडल में इनके सामने से परिभ्रमण करते हुए गुजरते हैं, तो उनके सामने आने से इनका उतना भाग अदृश्य हो जाता है। मानों ये उनके उतने भाग को ग्रस्त कर लेते हैं। जन-व्यवहार की भाषा में प्रगृति के इसी परिवर्तन दृश्य का नाम सूर्यग्रहण या चन्द्रग्रहण है। राहु सौरमण्डल का आठवां ग्रह है और वैज्ञानिक अनुसन्धानों के अनुसार एक सौर मण्डल में कई-कई पुच्छल तारे भी होते हैं। कभी कोई पुच्छल तारा परिभ्रमण करता हुआ चन्द्र-सूर्य के समक्ष आ जाता है तो कभी कोई इस प्रकार ग्रहों के गतिशील होने के कारण यह क्रम चलता रहता है। इसी ग्रहज्ञान का पूर्वोक्त आख्यान में वर्णन है।

**आख्यान से प्राप्त शिक्षा**

जैसा कि पहले बताया जा चुका है, सूर्य-चन्द्र दिव्यगुण और हितकारी गुणप्रधान होने से ''देवों'' के प्रतीक हैं और राहु-केतु असुरों-दैत्यों के प्रतीक हैं। असुरों का यह स्वभाव है कि वे श्रेष्ठजनों की श्रेष्ठता को सहन नहीं कर पाते और अकारण ईर्ष्या, द्वेष, वैमनस्य की भावना रखकर हानि पहुँचाने का प्रयास करते हैं। ऐसे लोगों से सावधान रहना चाहिये और ऐसे उपाय करने चाहिए कि उनसे स्वयं को सुरक्षित रखें तथा उनके कुप्रयासों को सफल न होने दें। यह भी कि हमें अपने अन्दर इस प्रकार की आसुरी प्रवृत्तियाँ नहीं पनपने देनी चाहियें, क्योंकि वे लोकविकृष्ट, और व्यक्ति तथा समाज के लिए अहितकर हैं।

इस प्रकार इनके माध्यम से इस आख्यान में लोकहितकारी दैवी शक्ति और लोक-अहितकारी आसुरी शक्ति का यथार्थ चित्रण हुआ है।

कुलपति, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

thearyasamaj.org

Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11/6066/2012-14
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103/2012-14
POSTED AT N.D.P.S.O. ON 21-22/5/2014
रजिस्ट्रेशन नं. आर० एन० आई० 39/57

# जम्मू काश्मीर में पहली आर्य महिला सम्मानित

## डॉ. वेद कुमारी घई को मिला पद्म श्री सम्मान

सभी आर्यजनों के लिए यह प्रसन्नता और गौरव का विषय है कि आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू व कश्मीर (पंजीकृत) की पूर्व प्रधाना व जम्मू विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग की पूर्व अध्यक्षा डॉ. वेद कुमारी घई जी की उनकी समाज सेवा के लिये महामहिम राष्ट्रपति जी द्वारा 31 मार्च 2014 को ''पद्म श्री'' से सम्मानित किया गया है। सम्पूर्ण आर्य परिवार के लिये गौरव का विषय है। डॉ. घई जी को अन्य विभिन्न प्रान्तीय, राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कारों से भी सम्मानित किया गया है।

14 दिसम्बर 1931 में जम्मू में जन्मी वेदकुमार घई ने बनारस हिन्दु विश्वविद्यालय से 1960 में पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की। डेनमार्क की सरकार से शोधवृत्ति पा कर कोपेनहेग विश्वविद्यालय में शोधवृत्ति पाकर डोगरी ध्वनियों पर शोध कार्य किया और वहाँ के भारती संस्थान में संस्कृत का अध्यापन भी किया। कला संकाय की अध्यक्षा के रूप में किया विश्वविद्यालय के शोध पटलों की सदस्या रहीं। उन के निर्देशन में एम.फिल. तथा अठारह पी.एच.डी उपाधि प्राप्त शोध प्रबन्ध लिखे गये हैं। अनेक राष्ट्रिय तथा अन्तर्राष्ट्रिय सम्मेलनों में उन्होंने भाग लिया। उन के सत्तर से अधिक शोधपत्र प्रकाशित हैं।

प्रो. घई डोगरी रिसर्च इन्स्टीट्यूट, डोगरी संस्था भारतीय विद्या भवन, संस्कृत विश्वविद्यालय, साहित्य अकादमी दिल्ली जम्मू कश्मीर कला संस्कृति तथा भाषा अकादमी कस्तूरबा गांधी ट्रस्ट, सामाजिक स्वास्थ्य संस्थान जैसी कई संस्थानों के साथ सम्बद्ध रहीं हैं।

प्रो. वेद कुमारी घई को कई पुरस्कार/सम्मान प्राप्त हो चुके हैं जैसे कि –

- भारत के राष्ट्रपति द्वारा संस्कृत के वैदुष्य के लिए सम्मान वर्ष 1997
- शारदा सम्मान 1993, लल्लेश्वरी सम्मान 2007
- स्त्रीशक्ति पुरस्कार भारत सरकार वर्ष 2009
- समाज सेवा के लिए स्वर्ण पदक जम्मू कश्मीर सरकार 1995
- डोगरारत्न सम्मान वर्ष 2005
- महाराजा गुलाब सिंह पुरस्कार 2012
- पद्म श्री सम्मान भारत के राष्ट्रपति द्वारा

# डी.ए.वी. चीका ने मानव श्रृंखला बनाकर दिया धरा बचाने का संदेश

डी.ए.वी. पब्लिक सीनियर सैकेंडरी स्कूल चीका में विश्व धरती बचाओ दिवस पर प्रिंसीपल पूनम सिंह के नेतृत्व में विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। बच्चों ने पोस्टर बनाकर, स्लोगन लिखकर, कविता तथा भाषण व अन्य कार्यक्रमों की प्रस्तुतियों के माध्यम से धरती की बिगड़ती हालत व भविष्य में ग्लोबल वार्मिंग से होने वाले खतरों के प्रति चेताया। अध्यापकों की एक विशेष टीम ने बच्चों को एकत्रित करके क्रमबद्ध तरीके से बड़ी मानव श्रृखला बनाकर ग्लोबल वार्मिंग से पृथ्वी को बचाने का संदेश दिया व प्रिंसीपल पूनम सिंह के नेतृत्व में सभी बच्चों, अध्यापकों ने पेड़ों को न काटने व पर्यावरण को बचाने संकल्प भी लिया। पूनम सिंह ने अपने संबोधन में कहा कि मनुष्य के जीवन में धरती मां, भारत माता, जननी व गऊ माता, इन चार माताओं का विशेष महत्त्व है, परन्तु धरती मां व भारत माता के

दर्जे को विशेष माना गया है क्योंकि धरती मां इस पूरे संसार का भार अपने ऊपर उठाए हुए है और भारत माता हमारे अस्तित्व की साक्षी है। उन्होंने कहा कि यदि हम इस दुनिया में अपना वजूद कायम करना चाहते हैं तो, हमें सबसे पहले दिन प्रतिदिन बढ़ रहे ग्लागल वार्मिंग के खतरे से धरती मां के अस्तित्व को बचाने के लिए आगे आना होगा। प्रिंसीपल सिंह ने कहा कि इस खतने के कारण प्राकृतिक आपदाओं की लगातार बढ़ रही संख्या है व विलुप्त होती जा रही जीव जंतु और विभिन्न पौधों की प्रजातियां है पर चिन्ता व्यक्त की और बच्चों और अध्यापकों का आह्वान किया कि सभी अपने जीवन के उत्सवों व खुशी के पलों को पौधे लगाकर मनाएं व पहले से लगे हुए पौधों की देखभाल व रक्षा करने में अपना दायित्व निभाएं।

# डी.ए.वी. आर.के.पुरम् के छात्रों ने स्केटिंग पार्क में किया पर्यावरण शुद्धि यज्ञ

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल आर. के. पुरम सेक्टर–9 के छात्र–छात्राओं द्वारा पर्यावरण की शुद्धि के लिए स्केटिंग पार्क में हवन का आयोजन स्थानीय लोगों के साथ विद्यालय की प्राचार्य श्रीमती अनिता चोपड़ा की प्रेरणा से किया गया।

यज्ञ का उद्देश्य लोगों में 'यज्ञ' के प्रति जागरुकता बढ़ाने तथा पर्यावरण को स्वच्छ रखने के लिए प्रेरित करना था। यज्ञ के ब्रह्मा श्री देवव्रत शास्त्री जी यज्ञ के महत्व को बताते हुए बोले–हम अपने शरीर के द्वारा प्रतिदिन वायु, जल और पृथिवी को प्रदूषित करते हैं। इस कारण अनेक बीमारियाँ फैल रही हैं। इस प्रदूषण को रोकना तथा वायु, जल, पृथिवी को पवित्र करना हमारा परम कर्त्तव्य है। उन्होंने बताया कि सब प्रकार के प्रदूषणों को रोकने का एक ही मुख्य साधन है और वह है– हवन। यह वह अनुष्ठान हैजो प्रतिदिन करने पर धर्म का पुण्य भी प्रदान करता है और समाज के उपकार के पुण्य का भी। दुःख का विषय तो यह है कि आज हमने उस पुण्यप्रद अनुष्ठान को छोड़ दिया है। हम पश्चात्य संस्कृति के विचारों में बहकर पथभ्रष्ट हों गये हैं। हम एक से बढ़कर एक

भयंकर रोग से ग्रस्त होते जा रहे हैं। आइये यज्ञ की ओर लौटें। पुण्य भी कमायें और नीरोग भी रहें।

डी.ए.वी. आर.के.पुरम् को इस पहल की अत्यन्त प्रशंसा हुई

मुद्रक व प्रकाशक – श्री प्रबोध महाजन, सभा मंत्री द्वारा मदन गोयल के प्रबंध में अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि., डब्ल्यू–30, ओखला, फेस–II, नई दिल्ली–110020 (दूरभाष : 26388830–32) से मुद्रित कार्यालय 'आर्य जगत्' आर्यसमाज भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–110001 से प्रकाशित। स्वामित्व – आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–110001 (दूरभाष : 23362110, 23360059) सम्पादक – श्री पूनम सूरी